ओ३म्

वर्षम् - १०, अङ्कः - १३०
चैत्र-वैशाखमासः-२०७६/ अप्रैलमासः-२०१९

आर्ष-ज्योतिः

ज्योतिष्कृणोति सूनरी

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास का द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

३१ मई एवं १, २ जून २०१९ शुक्र, शनि, रवि को गुरुकुल पौन्धा, देहरादून का १९ वाँ वार्षिकोत्सव अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है, आप सभी सादर आमन्त्रित हैं...

प्रसारणकार्यालयः

श्रीमद् दयानन्दार्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुलम् पौन्धा,
देहरादूनम् (उत्तराखण्डः)

दूरवाणी - ७५७६४६६६५६ चलवाणी - ०६४१११०६१०४
ई-मेल : arsh.jyoti@yahoo.in Website: www.pranwanand.org

आओ, चलें! आर्यों के तीर्थस्थल

ओ३म्

आओ, चलें! गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

पावका नः सरस्वती

॥ निमन्त्रण पत्र ॥

श्रीमद्दयानन्द-वेदार्ष-महाविद्यालय (न्यास)

119 गौतमनगर, नई दिल्ली-110049 द्वारा संचालित शाखा नं.-3

श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल

आर्यपुरम्, दून वाटिका, भाग-2, पौन्धा देहरादून (उत्तराखण्ड)

का

त्रिदिवसीय वार्षिकमहोत्सव एवं स्थापना दिवस समारोह

तथा ऋग्वेद पारायण महायज्ञ

ज्येष्ठ सुदी द्वादशी, त्रयोदशी एवं चतुर्दशी विक्रम संवत् २०७६, सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,१२०

तदनुसार 31 मई एवं 1, 2 जून 2019 शुक्र, शनि, रविवार

वार्षिकोत्सव एवं स्थापना दिवस तथा ऋग्वेद पारायण महायज्ञ के
इस शुभ अवसर पर

आप इष्ट मित्रों सहित सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

विशेष आकर्षण

स्वाध्याय शिविर ›› 27 मई से 31 मई तक

आचार्य-डॉ. सोमदेव शास्त्री जी (मुम्बई) :: संयोजक-श्री सुखवीर सिंह आर्य

सम्पर्क सूत्रः (देहरादून) 09411106104, 09411310530, 08810005096
(दिल्ली) 09868855155, 09810420373
www.pranwanand.org, info@pranwanand.org, arsh.jyoti@yahoo.in

❖ ओ३म् ❖

आर्ष-ज्योतिः

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास

का

द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

चैत्र-वैशाखमासः, विक्रमसंवत्-२०७६ / अप्रैलमासः-२०१९, सृष्टिसम्वत्-१,९६,०८,५३,१२०

वर्षम् - १० :: अङ्कः - १३०   मूल्यम्- रु. ५ प्रति, वार्षिकम्-५०

❖संरक्षकाः❖

स्वामी प्रणवानन्दः सरस्वती
कै. रुद्रसेन आर्यः
प्रो.पीयूषकान्तदीक्षितवर्याः
श्रीगिरीश-अवस्थीवर्याः

❖परामर्शदातृमण्डलम्❖

डॉ. रघुवीरवेदालङ्कारः
प्रो. महावीरः
आचार्ययज्ञवीरवर्याः
श्रीचन्द्रभूषणशास्त्री

❖मुख्यसम्पादकौ❖

डॉ. धनञ्जय आर्यः
डॉ. रवीन्द्रकुमारः

❖कार्यकारी सम्पादकः❖

ब्र. शिवदेवार्यः

❖व्यवस्थापकौ❖

ब्र. अनुदीपार्यः
ब्र. कैलाशार्यः

❖कार्यालयः❖

श्रीमद्दयानन्द-आर्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुलम्
दूनवाटिका-२, पौन्धा,
देहरादूनम् (उत्तराखण्डः)
दूरवाणी-०९४११९०६१०४, ८८१०००५०९६
website: www.pranwanand.org
E-mail : arsh.jyoti@yahoo.in

विषय-क्रमणिका

विषयः	पृष्ठः
अथार्य्याभिविनयः	२
सम्पादकीय	३
गायत्री मन्त्र की वैज्ञानिक व्याख्या	५
और हम जीत गए..	८
प्राचीनकाल में गुरुकुल शिक्षा पद्धति	११
भारत में उत्पन्न सब लोगों को देश की उन्नति...	१३
सोलह-संस्कार	१६
आधुनिक युग में गुरुकुल शिक्षा की उपयोगिता	१७
वाणी	२०
योगदर्शनशिक्षणम्	२१
लाला लाजपतराय से जुड़ा एक प्रेरक प्रसङ्ग	२२
संस्कृतशिक्षणम्	२३

आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।

न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

प्रकाशनतिथि-३ जनवरी २०१९ :: डाकप्रेषणतिथि-८ जनवरी २०१९

ओ३म् तत् सत् परब्रह्मणे नमः

अथार्य्याभिविनयः

(५)

ऋषिः- मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः। **देवता**- अग्निः। **छन्दः**- गायत्री। **स्वरः**- षड्जः।

अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः।
देवो देवेभिरा गमत्॥ ऋग्वेद १/१/५॥

अग्निः। होता। कविऽक्रतुः। सत्यः। चित्रश्रवःऽतमः। देवः। देवेभिः। आ। गमत्॥

अन्वयः-

य: सत्यश्चित्रश्रवस्तम: कविक्रतु: होता दिवोऽग्नि: परमेश्वरो भौतिकश्चास्ति, स देवेभि: सहागमत्॥

पदार्थः-

(अग्निः) परमेश्वरो भौतिको वा **(होता)** दाता ग्रहीता द्योतको वा **(कविक्रतुः)** कविः सर्वज्ञः क्रान्तदर्शनो वा। करोति यो येन वा स क्रतुः, कविश्चासौ क्रतुश्च सः। **कविः क्रान्तदर्शनो भवति कवतेर्वा।** (निरुक्त १२.१३) यः सर्वविद्यायुक्तं वेदशास्त्रं कवते उपदिशति सः कविरीश्वरः। क्रान्तं दर्शनं यस्मात्स सर्वज्ञो भौतिको वा क्रान्तदर्शनः। **कृञः कतुः** (उणा० १.७६) अनेन कृञो हेतुकर्तरि कर्तरि वा कतु प्रत्ययः। **(सत्यः)** सन्तीति सन्तः, सद्भ्यो हितः तत्र साधुर्वा। **सत्यं कस्मात्सत्सु तायते सत्प्रभवं भवतीति वा।** (निरुक्त ३.१३) **(चित्रश्रवस्तमः)** चित्रमद्भुदं श्रवः श्रवणं यस्य सोऽतिशयितः **(देवः)** स्वप्रकाशः प्रकाशकरो वा **(देवेभिः)** विद्वद्भिर्दिव्यगुणैः सह वा **(आ)** समन्तात् **(गमत्)** गच्छतु प्राप्तो भवति वा। लुङ्प्रयोगोऽडभावश्च॥

आर्याभिविनयः-

(कविः) हे सर्वदृक्-सबको देखनेवाले! **(क्रतुः)** सब जगत् के जनक, **(सत्यः)** अविनाशी अर्थात् कभी जिनका नाश नही होता **(चित्रश्रवस्तमः)** आश्चर्य, आश्चर्यगुण, आश्चर्यश्रवणादि, आश्चर्यरूपवान् और अत्यन्त उत्तम आप हो। जिन आपके तुल्य वा आप से बड़ा कोई नहीं है।**(देव)** हे जगदीश! **(देवेभिः)** दिव्यगुणो के सह वर्तमान हमारे हृदय में आप प्रकट हो, सब जगत् में भी प्रकाशित हो। जिससे हम और हमारा राज्य दिव्यगुणयुक्त हो। वह राज्य आपका ही है, हम तो केवल आपके पुत्र तथा भृत्यवत् है।।

संस्कृताभिविनयः-

हे सर्वदृक्! सकलजगज्जनक! अविनाशिन्! श्रवणाद्यश्चर्यगुणवान्नाश्चर्यशक्तिमान् न कश्चिदस्ति। हे जगदीश! दिव्यगुणैस्सहास्मद् हृदि चकास्तात् सकलजगति चापि। येन वयमस्मद्राज्यं च दिव्यगुणान्वितं स्याताम्। तद्राज्यं भवदीयमेवास्ति वयं तु भवतः पुत्रस्तथा भृत्यवत्स्मः॥५॥ **- स्वामी दयानन्द सरस्वती**

आईये! गुरुकुल पौन्धा, देहरादून चलें...

३१ मई,१ एवं २ जून २०१९ को १९ वाँ वार्षिकोत्सव तथा ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है, आप परिवार व इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

सम्पादक की कलम से...

विचारणीय बिन्दु

सम्मान्य विद्वद्वरेण्य एवं आर्यबन्धुओं!

ईश्वर की महती अनुकम्पा से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सन् १८७५ में मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी, जिसका उद्देश्य वेदों के चिन्तन व आदर्श को स्थापित करना था। यह ध्यातव्य है कि इस उद्देश्य की पूर्ति का केन्द्रबिन्दु शिक्षा प्रणाली ही है, जिसके माध्यम से समाज में एक नवीन क्रान्ति व विचारधारा को उत्पन्न किया जा सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थप्रकाश के तृतीय सम्मुल्लास में समुचित, सर्वांपूर्णा एवं आदर्शशिक्षा -व्यवस्था का चिन्तन किया है, जो सार्वकालिक व सार्वभौमिक शिक्षा व्यवस्था है। यह शिक्षा व्यवस्था आज आर्षपाठविधि के नाम से विख्यात है, परन्तु खेद है कि वर्तमान में आर्षपाठविधि सर्वत्र तिरस्कृत व तिरोहित होती जा रही है, जबकि आधुनिक मैकाले शिक्षापद्धति पूर्णतः अप्रासंगिक सिद्ध हो रही है। ऐसे विकराल समय में इस विषय पर सभी विद्वानों व आर्यनेताओं को एकत्र होकर विचार करना होगा। इस विषय में कुछ विचारणीय बिन्दु हम सभी के समक्ष हैं-

१. भारत के सभी प्रान्तीय शैक्षिक बोर्ड आर्षपाठविधि को स्थान नहीं दे रहे हैं, जिसके कारण शनैः शनैः सभी प्रान्तों के गुरुकुलों से आर्षपाठविधि समाप्त होती जा रही है, जिससे आर्षपाठविधि से पठित स्नातक नहीं निकल पा रहे हैं। बिना आर्षपाठविधि के पठित स्नातक वेद के गूढार्थ व वैदिक शास्त्रीय परम्परा को कैसे समझ पायेगा एवं आर्यसमाज की शास्त्रार्थपरम्परा का निर्वहण कैसे सम्भव हो सकेगा? केवल गुरुकुल के नाम से संचालित होने वाली शिक्षणसंस्था में रह लेने से मात्र से वैदिक सिद्धान्तों व आर्यसमाज के सिद्धान्तों का गूढ ज्ञान सम्भव नहीं है? ऐसी विकट परिस्थिति में हमारे गुरुकुलों की आदर्शभूत संस्था स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार एकमात्र आशा का केन्द्र हो सकता है, जहाँ हम पूर्णतः आर्ष पाठविधि की परीक्षा व्यस्था को स्थापित कर अध्ययन-अध्यापन कर सकते हैं। यदि राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, दिल्ली की तरह गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार सभी गुरुकुलों का प्रतिनिधि बन सके तो यह समस्या सदा के लिए समाप्त हो सकती है। इसके लिए गुरुकुल का नेतृत्व सुयोग्य व आर्यभावनाभिभूत व्यक्तित्व के हाथों में आना चाहिए।

२. यू. जी. सी. आदि संस्थाओं द्वारा महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज को अपने पाठ्यक्रम में उचित स्थान नहीं दिया गया है। वर्तमान में यू.जी.सी. ने दर्शन के पाठ्यक्रम में स्वामी विवेकानन्द, इकवा़ल आदि के तो दर्शन को सम्मिलित किया है, परन्तु महर्षि दयानन्द के दर्शन को कहीं भी स्थान नहीं दिया है, जो कि सर्वथा न्यायोचित नहीं है। इसके लिए सभी विद्वद्वरेण्यों व आर्यनेताओं को विचार करना होगा।

३. आर्यजन एवं अधिकारियों से निवेदन है कि भिन्न-भिन्न राज्यों में स्थापित राज्य सरकारों द्वारा एवं विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों में महर्षि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों व आर्ष ग्रन्थों के समावेश के लिए प्रयत्न करते रहना होगा, तभी वेद के सत्य सिद्धान्तों एवं आर्य समाज की रक्षा सम्भव है।

४. आर्य समाज की सम्पूर्ण भारतवर्ष में अनेकशः परम्परागत व आधुनिक शिक्षण संस्थाएँ हैं। इनमें कुछ परम्परागत संस्थाओं को छोड़ अन्यत्र कहीं पर भी वैदिक आर्यसिद्धान्तों का ज्ञान किसी भी रूप में छात्रों तक नहीं पहुँच पा रहा है। इसके लिए हमें एकत्र होकर एक ऐसा पाठ्यक्रम अथवा शैक्षणिक पुस्तिका बनानी चाहिए, जो आर्यसमाज की सभी शैक्षणिक संस्थाओं में उचित व्यवस्था के अन्तर्गत पढ़ायी जायें। इस दिशा में श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् द्वारा आयोजित वैदिक सिद्धान्त परीक्षा एक मील का पत्थर सिद्ध हो सकती है, जिससे निश्चित रूप में आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाओं में पढ़े छात्रों को वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान हो सकेगा।

५. महर्षि दयानन्द सरस्वती व आर्यसमाज ने सर्वत्र वैदिक ग्रन्थों की वैज्ञानिकता व तथ्यपरकता को स्थापित करने का प्रयास किया है। आज महर्षि दयानन्द सरस्वती का वेदों का वैज्ञानिक भाष्य हमारे समक्ष आदर्शभूत है। लगभग १४४ वर्ष आर्यसमाज की स्थापना के होने के उपरान्त भी वैदिक ग्रन्थों व शास्त्रों के वैज्ञानिक व शोधपरक अध्ययन की व्यवस्था आर्यसमाज नहीं कर पाया है, जो शोध हो रहे हैं, वे मात्र पिष्ट-पेषण एवं लेखमात्र बनकर रह गये हैं, यह अत्यन्त दु:खद विषय है। बिना वैज्ञानिक व शोधपरक अध्ययन किये वैदिक ग्रन्थों व शास्त्रों की रक्षा कैसे होगी? इस विषय में हमें गम्भीर चिन्तन करना होगा।

६. आर्षग्रन्थों के अध्ययन व अध्यापन के अभाव में आर्ष-ग्रन्थों का प्रकाशन भी शनैः शनैः अस्ताचल की ओर है। आर्ष ग्रन्थों का प्रकाशन लाला दीपचन्द जी का आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा का प्रकाशन, गुरुकल झज्जर, रामलाल कपूर ट्रस्ट आदि के माध्यम से होता रहा है, परन्तु वर्तमान में आर्ष ग्रन्थों का प्रकाशन भी एक चिन्ता का विषय बन गया है।

७. महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन कराने वाले गुरुकुल जिस किसी स्थान पर, जिन किन्हीं परिस्थितियों में कार्य कर रहे हैं, उन गुरुकुलों का सामाजिक व आर्थिक सहयोग करना आर्षपाठविधि की रक्षा ही होगी। इसके लिए आर्यजन व आर्यसमाज के अधिकारियों को यथासम्भव सहयोग अनिवार्यरूप से सुनिश्चित करना होगा।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप सब महर्षि दयानन्द के अनन्यतम अनुयायी हैं। आप मेरी भावना को समझ इस दिशा में उचित प्रयास करने व कराने की कृपा करेंगे, जिससे उत्तरोत्तर आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार हो सके।

-स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती...✍
संस्थापक
गुरुकुल-पौन्धा, देहरादून

'आर्ष-ज्योतिः' के लिए सहयोग

'आर्ष-ज्योतिः' मासिक पत्रिका के लिए आप हमें बैंक में धन प्रेषित कर सहयोग कर सकते हैं -

बैंक नाम	: **ओरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स**	शाखा	: **पौन्धा, देहरादून**
खाता नाम	: **आर्ष-ज्योतिः**	खाता क्रमांक	: **15511131000446**
IFSC	: **ORBC0102214**	**PAN NO**	: **ABHFA5834C**

गायत्री मन्त्र की वैज्ञानिक व्याख्या

❑ आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक...✍

भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। (यजु.३६.३)

महर्षि दयानन्द भाष्य-

भूः। भुवः। स्वः। तत्। सवितुः। वरेण्यम्। भर्गः। देवस्य। धीमहि।। धियः। यः। नः। प्रचोदयादिति प्रऽचोदयात्।।

पदार्थ- (भूः) कर्मविद्याम् (भुवः) उपासनाविद्याम् (स्वः) ज्ञानविद्याम् (तत्) इन्द्रियैरग्राह्यं परोक्षम् (सवितुः) सकलैश्वर्यप्रदस्येश्वरस्य (वरेण्यम्) स्वीकर्त्तव्यम् (भर्गः) सर्वदुःखप्रणाशकं तेजःस्वरूपम् (देवस्य) कमनीयस्य (धीमहि) ध्यायेम् (धियः) प्रज्ञाः (यः) (नः) अस्माकम् (प्रचोदयात्) प्रेरयेत्।।

भावार्थ-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः कर्मोपासनाज्ञानविद्याः संगृह्याखिलैश्वर्ययुक्तेन परमात्मना सह स्वात्मनो युंजतेऽधर्माऽनैश्वर्यदुःखानि विधूय धर्मैश्वर्यसुखानि प्राप्नुवन्ति तानन्तर्यामिजगदीश्वरः स्वयं धर्मानुष्ठानमधर्मत्यागं च कारयितुं सदैवेच्छति।।

पदार्थ- हे मनुष्यो! जैसे हम लोग (भूः) कर्मकाण्ड की विद्या (भुवः) उपासना काण्ड की विद्या और (स्वः) ज्ञानकाण्ड की विद्या को संग्रहपूर्वक पढ़के (यः) जो (नः) हमारी (धियः) धारणावती बुद्धियों को (प्रचोदयात्) प्रेरणा करे उस (देवस्य) कामना के योग्य (सवितुः) समस्त ऐश्वर्य के देनेवाले परमेश्वर के (तत्) उस इन्द्रियों से न ग्रहण करने योग्य परोक्ष (वरेण्यम्) स्वीकार करने योग्य (भर्गः) सब दुःखों के नाशक तेजःस्वरूप का (धीमहि) ध्यान करें, वैसे तुम भी इसका ध्यान करो।।

भावार्थ- इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य कर्म, उपासना और ज्ञान सम्बन्धिनी विद्याओं का सम्यक् ग्रहण कर सम्पूर्ण ऐश्वर्य से युक्त परमात्मा के साथ अपने आत्मा को युक्त करते हैं तथा अधर्म, अनैश्वर्य और दुःख रूप मलों को छुड़ा के धर्म, ऐश्वर्य और सुखों को प्राप्त होते हैं उनको अन्तर्यामी जगदीश्वर आप ही धर्म के अनुष्ठान और अधर्म का त्याग कराने को सदैव चाहता (ते) है।।

इसका भाष्य Ralph T.H. Griffith ने इस प्रकार किया है-

"May we attain that eñcellent glory of Savitar the God. So may he stimulate our prayers."

यह भाष्य आध्यात्मिक है परन्तु विज्ञ पाठक स्वयं इसकी तुलना महर्षि दयानन्द के भाष्य से करके ग्रिफिथ के वैदुष्य का स्तर जान सकते हैं।

मेरा भाष्य

यह मन्त्र (व्याहृति रहित रूप में) यजु.३.३५; २२.९; ३०.२; ऋ. ३.६२.१०; सामवेद १४६२ में भी विद्यमान है। यह ऐतरेय ब्राह्मण में भी अनेकत्र आया है। इनमें से यजुर्वेद ३०.२ में इस मन्त्र का ऋषि नारायण तथा अन्यत्र विश्वामित्र है। देवता सविता, छन्द निचृद् बृहती एवं स्वर षड्ज है। व्याहृतियों का छन्द दैवी बृहती तथा स्वर व्याहृतियों सहित सम्पूर्ण मन्त्र का मध्यम षड्ज है। महर्षि दयानन्द ने सर्वत्र ही इसका भाष्य आध्यात्मिक किया है। केवल यजुर्वेद ३०.२ के भावार्थ में आधिभौतिक का स्वल्प संकेत भी है; शेष आध्यात्मिक ही है। एक विद्वान् ने कभी हमें कहा था कि गायत्री मन्त्र जैसे कुछ मन्त्रों का आध्यात्मिक के अतिरिक्त अन्य प्रकार से भाष्य हो ही नहीं सकता। हम संसार के सभी वेदज्ञों को घोषणापूर्वक कहना चाहते हैं कि वेद का प्रत्येक मन्त्र इस सम्पूर्ण सृष्टि में अनेकत्र vibrations के रूप में विद्यमान है। इन मन्त्रों की इस रूप में उत्पत्ति पृथिव्यादि लोकों की उत्पत्ति से भी पूर्व में हो गयी थी। इस कारण प्रत्येक मन्त्र का आधिदैविक भाष्य अनिवार्यतः होता है। त्रिविध अर्थ प्रक्रिया में सर्वाधिक

व सर्वप्रथम सम्भावना इसी प्रकार के अर्थ की होती है। इस कारण इस मंत्र का आधिदैविक अर्थ नहीं हो सकता, ऐसा विचार करना वेद के यथार्थ स्वरूप से नितान्त अनभिज्ञता का परिचायक है।

मेरा आधिदैविक भाष्य

इस मंत्र का महर्षि दयानन्द द्वारा किया हुआ आध्यात्मिक भाष्य हमने ऊपर उद्धृत किया है। अब हम इसी मंत्र का आधिदैविक भाष्य करते हैं। इस ऋचा का देवता सविता है। सविता के विषय में ऋषियों का कथन है-

''सविता सर्वस्य प्रसविता'' (नि.१०.३१)
''सविता वै देवानां प्रसविता'' (श.१.१.२.१७)
''सविता वै प्रसवानामीशे'' (ऐ.१.३०)
''प्रजापतिर्वै सविता'' (तां.१६.५.१७),
''मनो वै सविता'' (श.६.३.१.१३)
''विद्युदेव सविता'' (गो.पू.१.३३)
''पशवो वै सविता'' (श.३.२.३.११)
''प्राणो वै सविता'' (ऐ.१.१९)
''वेदा एव सविता'' (गो.पू.१.३३)
''सविता राष्ट्रं राष्ट्रपतिः'' (तै.ब्रा.२.५.७.४)

इससे निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं-

१. सविता नामक पदार्थ सबकी उत्पत्ति व प्रेरणा का स्रोत वा साधन है।
२. यह सभी प्रकाशित व कामना अर्थात् आकर्षणादि बलों से युक्त कणों का उत्पादक व प्रेरक है।
३. यह सभी उत्पन्न पदार्थों का नियन्त्रक है।
४. 'ओम्' रश्मि रूप छन्द रश्मि एवं मनस्तत्व ही सविता है।
५. विद्युत् को भी 'सविता' कहते हैं।
६. विभिन्न मरुद् रश्मियां एवं दृश्य कण 'सविता' कहलाते हैं।
७. विभिन्न प्राण रश्मियां 'सविता' कहलाती हैं।
८. सभी छन्द रश्मियां भी 'सविता' हैं।
९. तारों के केन्द्रीय भाग रूप राष्ट्र को प्रकाशित व उनका पालन करने वाला सम्पूर्ण तारा भी 'सविता' कहाता है।

यह हम पूर्व में लिख चुके हैं कि देवता किसी भी मंत्र का मुख्य प्रतिपाद्य विषय होता है। इस कारण इस मंत्र का मुख्य प्रतिपाद्य 'ओम्' छन्द रश्मि, मनस्तत्व, प्राण तत्व एवं सभी छन्द रश्मियां हैं। इस ऋचा की उत्पत्ति विश्वामित्र ऋषि [वाग् वै विश्वामित्रः (कौ.ब्रा.१०.५), विश्वामित्रः सर्वमित्रः (नि. २.२४)] अर्थात् सबको आकृष्ट करने में समर्थ 'ओम्' छन्द रश्मियों से होती है।

आधिदैविक भाष्य- (भूः) 'भूः' नामक छन्द रश्मि किंवा अप्रकाशित कण वा लोक, (भुवः) 'भुवः' नामक रश्मि किंवा आकाश तत्व, (स्वः) 'सुवः' नामक रश्मि किंवा प्रकाशित कण, फोटोन वा सूर्यादि तारे आदि से युक्त। (तत्) उस अगोचर वा दूरस्थ सविता अर्थात् मन, 'ओम्' रश्मि, सभी छन्द रश्मियां, विद्युत् सूर्यादि आदि पदार्थों को (वरेण्यम् भर्गः देवस्य) सर्वतः आच्छादित करने वाला व्यापक [भर्गः=अग्निर्वै भर्गः (श.१२.३.४.८), आदित्यो वै भर्गः (जै.उ.४.१२. २.२), वीर्यं वै भर्गऽएष विष्णुर्यज्ञः (श.५.४.५.१), अयं वै (पृथिवी) लोको भर्गः (श.१२.३.४.७)] आग्नेय तेज, जो सम्पूर्ण पदार्थ को व्याप्त करके अनेक संयोजक व सम्पीडक बलों से युक्त हुआ प्रकाशित व अप्रकाशित लोकों के निर्माण हेतु प्रेरित करने में समर्थ होता है, (धीमहि) प्राप्त होता है अर्थात् वह सम्पूर्ण पदार्थ उस आग्नेय तेज, बल आदि को व्यापक रूप से धारण करता है। (धियः यः नः प्रचोदयात्) जब वह उपर्युक्त आग्नेय तेज उस पदार्थ को व्याप्त कर लेता है, तब विश्वामित्र ऋषि संज्ञक मन व 'ओम्' रश्मि रूप पदार्थ [धीः=कर्मनाम (निघं. २.१), प्रज्ञानाम (निघं.३.९), वाग् वै धीः (ऐ.आ.१. १.४)] नाना प्रकार की वाग् रश्मियों को विविध दीप्तियों व क्रियाओं से युक्त करता हुआ अच्छी प्रकार प्रेरित व नियन्त्रित करने लगता है।

भावार्थ- मन एवं 'ओम्' रश्मियां व्याहृति रश्मियों से युक्त होकर क्रमशः सभी मरुद्, छन्द आदि रश्मियों को अनुकूलता से सक्रिय करते हुए सभी कण, क्वाण्टा एवं आकाश तत्व को उचित बल व नियन्त्रण

से युक्त करती हैं। इससे सभी लोकों तथा अन्तरिक्ष में विद्यमान पदार्थ नियन्त्रित ऊर्जा से युक्त होकर अपनी-अपनी क्रियाएं समुचित रूपेण सम्पादित करने में समर्थ होते हैं। इससे विद्युत् बल भी सम्यक् नियंत्रित रहते हैं।

सृष्टि में इस ऋचा का प्रभाव-इस ऋचा की उत्पत्ति के पूर्व विश्वामित्र ऋषि अर्थात् 'ओम्' छन्द रश्मियां विशेष सक्रिय होती हैं। इसका छन्द दैवी बृहती + निचृद् गायत्री होने से इसके छान्दस प्रभाव से विभिन्न प्रकाशित कण वा रश्मि आदि पदार्थ तीक्ष्ण तेज व बल प्राप्त करके सम्पीडित होने लगते हैं। इसके दैवत प्रभाव से मनस्तत्व एवं 'ओम्' छन्द रश्मि रूप सूक्ष्मतम पदार्थों से लेकर विभिन्न प्राण, मरुत् छन्द रश्मियां, विद्युत् के साथ-साथ सभी दृश्य कण वा क्वाण्टाज् प्रभावित अर्थात् सक्रिय होते हैं। इस प्रक्रिया में 'भू:', 'भुव:' एवं 'सुव:' नामक सूक्ष्म छन्द रश्मियां 'ओम्' छन्द रश्मि के द्वारा विशेष संगत व प्रेरित होती हुई कण, क्वाण्टा, आकाश तत्व तक को प्रभावित करती हैं। इससे इन सभी में बल एवं ऊर्जा की वृद्धि होकर सभी पदार्थ विशेष सक्रियता को प्राप्त होते हैं। इस समय होने वाली सभी क्रियाओं में जो-जो छन्द रश्मियां अपनी भूमिका निभाती हैं, वे सभी विशेष उत्तेजित होकर नाना कर्मों को समृद्ध करती हैं। विभिन्न लोक चाहे, वे तारे आदि प्रकाशित लोक हों अथवा पृथिव्यादि ग्रह वा उपग्रहादि अप्रकाशित लोक हों, सभी की रचना के समय यह छन्द रश्मि अपनी भूमिका निभाती है। इसके प्रभाव से सम्पूर्ण पदार्थ में विद्युत् एवं ऊष्मा की वृद्धि होती है परन्तु इस स्थिति में भी यह छन्द रश्मि विभिन्न कणों वा क्वाण्टाज् को सक्रियता प्रदान करते हुए भी अनुकूलता से नियन्त्रित रखने में सहायक होती है। इस ग्रन्थ के खण्ड ४.३२, ५.५ एवं ५.१३ में पाठक इस ऋचा का ऐसा ही प्रभाव देख सकते हैं। हाँ, वहाँ व्याहृतियों की अविद्यमानता अवश्य है। इसके षड्ज स्वर के प्रभाव से ये रश्मियां अन्य रश्मियों को आश्रय देने, नियन्त्रित करने, दबाने एवं वहन करने में सहायक होती है। व्याहृतियों का मध्यम स्वर इन्हें विभिन्न पदार्थों के मध्य प्रविष्ट होकर अपनी भूमिका निभाने का संकेत देता है। छन्द व स्वर के प्रभाव हेतु पूर्वोक्त छन्द प्रकरण को पढ़ना अनिवार्य है।

मेरा आधिभौतिक भाष्य

आधिदैविक भाष्य व वैज्ञानिक प्रभाव को दर्शाने के पश्चात् हम इस मंत्र के आधिभौतिक अर्थ पर विचार करते हैं-

[भू:=कर्मविद्याम्, भुव:=उपासनाविद्याम्, स्व:= ानविद्याम् (म.द.य.भा.३६.३)। सविता= योग पदार्थज्ञानस्य प्रसविता (म.द.य.भा.१.१.३), सविता राष्ट्रं राष्ट्रपति: (तै.ब्रा.२.५.७.४)] कर्मविद्या, उपासनाविद्या एवं ज्ञानविद्या इन तीनों विद्याओं से सम्पन्न (सवितु:) (देवस्य) दिव्य गुणों से युक्त राजा, माता-पिता किंवा उपदेशक आचार्य अथवा योगी पुरुष के (वरेण्यम्) स्वीकरणीय श्रेष्ठ (भर्ग:) पापादि दोषों को नष्ट करने वाले, समाज, राष्ट्र व विश्व में यज्ञ अर्थात् संगठन, त्याग, बलिदान के भावों को समृद्ध करने वाले उपदेश वा विधान को (धीमहि) हम सब मनुष्य धारण करें। (य:) ऐसे जो राजा, योगी, आचार्य वा माता-पिता और उनके विधान वा उपदेश (न:) हमारे (धिय:) कर्म एवं बुद्धियों को (प्रचोदयात्) व्यक्तिगत, आध्यात्मिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रिय वा वैश्विक उन्नति के पथ पर अच्छी प्रकार प्रेरित करते हैं।

भावार्थ- उत्तम योगी व विज्ञानी माता-पिता, आचार्य एवं राजा अपनी सन्तान, शिष्य वा प्रजा को अपने श्रेष्ठ उपदेश एवं सर्वहितकारी विधान के द्वारा सभी प्रकार के दु:खों, पापों से मुक्त करके उत्तम मार्ग पर चलाते हैं। ऐसे माता-पिता, आचार्य एवं राजा के प्रति सन्तान, शिष्य व प्रजा अति श्रद्धा भाव रखे, जिससे सम्पूर्ण परिवार, राष्ट्र वा विश्व सर्वविध सुखी रह सके।

- श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास,
वेद विज्ञान मंदिर, गाँव-भागल भीम
वाया-भीनमाल, जालोर (राज.)-३४३०२९

और हम जीत गए....

❑ ब्र. सूर्यप्रताप आर्य...✍

दिन रविवार का था बनवारीपुर गाँव के रसोई के चूल्हों से धुँआ उठ रहा था। लगभग सुबह सात बजे का समय था। सभी लोग घर के कार्यों को पूर्ण करके नित्य कर्मों से निवृत्त होकर गाँव के बाहर की सड़क पर टहलते हुए हलादि लेकर अपने खेतों की तरफ जा रहे थे। इसी सड़क पर दो आदमी भी जा रहे थे, एक का नाम था आकाश व दूसरे का नाम सौरभ था। दोनों बातें करते हुए जा रहे थे बातें करते हुए खेत पर पहुँच गए। आकाश ने कहा- अरे सौरभ! हम लोग बातों ही बातों में खेत पर आ गए, पता ही नही चला कि रास्ता कब समाप्त हो गया। तुम यहाँ बैठो मैं खेत के कार्य को समाप्त करके आता हूँ फिर बैठकर बातें करेंगे। दस बजते ही आकाश के कार्य समाप्त हो जाते है। माथे का पसीना पोछते हुए आकाश कुँए के पास आकर कहता है। अरे! तुम अब तक ऐसे ही बैठे हो आओ बैठकर भोजन खाते हैं। सौरभ भी हाँ में हाँ मिलाते हुए आकाश के सामने बैठ जाता है। दोनों भोजन खाना शुरू करते हैं। कुछ टुकड़े खाने के बाद आकाश चुप्पी तोड़ते हुए कहता है अरे सौरभ! तुम तो चुपचाप भोजन कर रहे हो कुछ बातें करो। सौरभ- क्या बात करूं। आकाश- अच्छा एक काम करो तुम अभी मैच जीतकर आये हो अपने अन्तिम मैच की बात बताओं, सुना है इस जीत में सूर्या का बहुत बड़ा हाथ था। सौरभ-हाँ! तुमने सही कहा। पर इसके पीछे भी बहुत बड़ी कहानी है। आकाश- तो सुना दो, भोजन समाप्ति तक कहानी भी समाप्त हो जायेगी। सौरभ- तो ठीक है तुम्हे भी सुना देते हैं। जैसा कि तुम जानते ही हो कि मैं और सूर्या पढ़ने और खेलने में बहुत तेज थे। कुछ समय के बाद हमारा प्रवेश पिताजी ने कॉलेज में करा दिया, वहाँ भी पढ़ने और खेलने में आगे ही थे। एक दिन कॉलेज के प्रधान अध्यापक ने हमारी कक्षा में आकर घोषणा की कि बच्चों कल हमारा देश खेल दिवस मना रहा है। तो हम सब अध्यापकों ने मिलकर एक योजना बनाई है कि हम अपने कॉलेज में खेलों का आयोजन करें। इन खेलों में बैडमिन्टन, बॉलीबॉल और फुटबॉल का आयोजन होगा। हर खेल में चार टीमें होंगी, और आज शाम तक सभी टीमों के नाम व खिलाड़ी घोषित हो जायेंगे। ऐसा कहकर सर चले जाते हैं। सर के जाने पर सूर्या कहता है कि सौरभ मौका मिला है इस मौके का फायदा जरूर उठाना। अगर इस मौके का फायदा हमने नहीं उठाया तो जीवनभर अपने को दोष देते रहेंगे। शाम हो जाती है और टीमें भी घोषित हो जाती है। कॉलेज की छुट्टी हो जाती है। अगले दिन की सुबह होते ही सभी कॉलेज पहुँच जाते हैं, और देखते ही देखते खेलों का आयोजन आरम्भ हो जाता है। फुटबॉल का प्रथम मैच शुरू हो जाता है। मैच बहुत ही रोमांचक हो रहा था। पहले मैच का निर्णय 'ब्लैक पैन्थर्स' टीम जीत गई। दूसरा मैच 'सूर्या ब्वाएस' व 'दिनेश रोबोकोप' का था। सीधी बात तो यह थी कि 'दिनेश रोबोकोप' की टीम में से उनका कप्तान दिनेश ऐसा खिलाड़ी था जो कि अपनी टीम का सबसे अद्वितीय खिलाड़ी था, बाकी पूरी टीम दिनेश के साथ टीम वर्क करने में सक्षम नहीं थी। पूरी टीम को कमजोर महसूस करते हुए सूर्या और सौरभ ने भी पूरा फायदा उठाया और दो-दो गोल करके अपनी टीम को फाइनल में पहुँचा दिया। उन दोनों के खेल को देखकर ब्लैक पैन्थर्स टीम के पसीने छूट गए। अब मौका था फाइनल मैच जीतकर कॉलेज में अपनी पहचान बनाने का मैच शुरू हुआ आरम्भ से ही 'ब्लैक पैन्थर्स' टीम ने 'सूर्या ब्वाएस' टीम पर दबाव बनाये रखा। मैच में २-१ की बढ़त मिली। पर उनकी एक गलती के कारण पूरा मैच ही बदल गया और सूर्या की टीम को एक फ्री किक मिली और सूर्या ने उसे बिना गवाए ही एक शानदार गोल में बदल दिया। अब मैच २-२ के स्कोर पर ड्रॉ हो गया। दोनों टीमों को एक-एक पैनेल्टी किक मिली। मैच का निर्णय 'सूर्या ब्वाएस' टीम के पक्ष में रहा। इस मुकाबले को देखने के लिए राज्य के खेल मन्त्री चन्द्रदेव बैठे थे। उन्होंने सूर्या व सौरभ को बुलाकर कहा कि मुझे तुम्हारा खेल बहुत ही

अच्छा लगा मैं चाहता हूँ कि तुम दोनों इस कॉलेज के लिए ही नहीं अपितु अपने देश के लिए भी खेलो। तुम्हारा खर्चा मैं स्वयं दूंगा, सूर्या व सौरभ को जीत के साथ पहचान तो मिली ही और साथ में पुरस्कार भी मिल गया। दोनों खुशी-खुशी घर जाते हैं। घर वाले भी उनके साथ मिलकर खुशी मनाते हुए उनके सफल होने की कामना करते हैं। अगले दिन सूर्या व सौरभ कॉलेज के बरामदे में से जा रहे थे कि तभी सूर्या की टक्कर एक कर्णिका नाम की लड़की से हुई, लड़की इतनी सुन्दर थी कि सूर्या उसे देखता ही रह गया। सौरभ जो कि चलते हुए आगे निकल गया था वह हाथ से छूकर कहता है। सूर्या अब देखते ही रहोगे या आगे भी चलोगे। सौरभ की बाते सुनकर सूर्या फुटबॉल के मैदान की ओर चल देता है। दोनों अभ्यास में जुट जाते हैं लेकिन सूर्या का ध्यान अभ्यास में नहीं लग रहा था। वह उसी लड़की के ख्यालों में खोया हुआ था। वह मैदान से निकलकर पार्क में आ जाता है। कुछ ही दूरी पर सूर्या को वही लड़की बैठी दिख जाती है, वह उसे फिर से देखने लगता है। लड़की उसे देखकर इशारा करती है और पूछती है- क्या हुआ? सूर्या गर्दन हिलाकर कहता है- कुछ नहीं। फिर कुछ देर रुक कर पूछता है- क्या हम दोनों आपस में बात कर सकते हैं? लड़की मन ही मन खुश होकर एकदम से ही हँसते हुए हाँ का उत्तर देती है। सूर्या- आपका नाम क्या है? लड़की- कर्णिका, और मैं शिकारपुर में रहती हूँ। बातों ही बातों में दोनों का बहूत-सा समय बीत जाता है। कॉलेज की छुट्टी हो जाती है, लेकिन सूर्या कर्णिका के ख्यालों से बाहर नहीं आ पाता है। वह घर जाकर भी सो नहीं पाता। सोचते-सोचते शाम और शाम से रात भी हो जाती है पर उसे नींद नहीं आती। ऐसा चलते-चलते एक महीना बीत जाता है। कुछ दिन बाद सौरभ व सूर्या को चयन समिति चयन के लिए बुलाती है। चयन समिति सूर्या व सौरभ को अलग-अलग टीमों में कर देती है। चयन प्रक्रिया में सौरभ चयनकर्ताओं को खुश कर देता है, लेकिन सूर्या नहीं कर पाता। सौरभ चन्द्रदेव के पास जाकर कहता है- सर सूर्या को एक मौका और दीजिए। हम दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। चन्द्रदेव उन दोनों को एक टीम में कर देते हैं। फिर दोनों मिलकर चयन समिति को खुश कर देते हैं। उन दोनों का चयन देश के लिए हो जाता है। छः महीने बाद विश्व का सबसे बड़ा फुटबॉल समारोह था, जिसमें दुनिया के चालीस देश खेलने वाले थे। सौरभ तो रोज मैदान में अभ्यास करता लेकिन सूर्या मैदान से आकर पार्क में बैठकर उस लड़की से बातों में समय बिताता था। एक दिन जब सूर्या लड़की के साथ पार्क में बैठा था तभी सौरभ सूर्या से कहता है- अगर तुम ऐसे ही समय गवाओगे तो हम देश को जीत नहीं दिला सकते। तुम लड़की के पीछे मत भागो, कोई ऐसा काम करो कि लड़की तुम्हारे पीछे भागे। लड़कियाँ लड़कों को दोस्त इसलिए बनाती है। ताकि उनका काम सिद्ध हो सके। सूर्या इस बात से नाराज होकर गुस्से से कहता है- सौरभ, दोस्त हो दोस्ती तक ही रहो यह मेरा निजी मामला है। सौरभ- तो ठीक है, इतने सालों तक तुम्हारे साथ रहा हूँ, तुम्हे समझाने का हक तो बनता ही है। याद रखना मुसीबत में लड़की काम नहीं आती, बलकि दोस्त और भरोसेमंद लोग ही काम आते हैं। इतना कहकर सौरभ वहाँ से चला जाता है। तभी बीच में आकाश टोकता हुआ कहता है- सही कहा है कि जवानी में व्यक्ति लड़की के लिए सब कुछ भूल जाता है। चाहे फिर वो उसके सगे या फिर सबसे प्रिय ही क्यों न हो। अच्छा आगे क्या हुआ? सौरभ ने कहा- फिर क्या होना था जैसे ही मैं वहाँ से चला उस लड़की ने गुस्से में मुझे बत्तमीज कह दिया। मैं उसकी इस बात को अनसुना कर आगे बढ़ गया। तभी पीछे से उस लड़की की सहेली ने आकर कहा- कनु घर चलते हैं। इतना सुनते ही सूर्या अपने और सौरभ के बीच के मामले को भूलकर आश्चर्य से कर्णिका से बोला- तुम्हारा नाम कनु भी है। कर्णिका- हाँ, अक्सर लोग मुझे प्यार से कनु भी कहते हैं। छह महीने के बाद सभी टीमें भारत आ जाती है। सभी टीमें अभ्यास में जुट जाती है। भारतीय टीम भी टक्कर के लिए तैयार थी, परन्तु सूर्या मैच के अभ्यास के वजाय कर्णिका के पास समय व्यतीत कर रहा था। भारत का पहला मैच इस लीग की सबसे कमजोर टीम हांग-कांग से था। मैच शुरू होते ही विपक्षी टीम ने भारतीय टीम पर दबाव बनाकर रखा। पहले हाफ में भारत १-० से पीछे रह जाता है। ड्रेसिंग रूम में सभी चिन्तित दिख रहे थे, तभी सौरभ उठकर गुस्से में कहता है- सूर्या

अपने खेल पर ध्यान दो हम देश के लिए खेल रहे है, किसी लड़की के लिए नहीं। देश है तो सब कुछ है अगर हम ये मैच हारे तो इसकी जिम्मेदारी तुम पर होगी। और याद रहे पूरे देश की नजर हम पर है। यह सुनकर सूर्या शर्मिन्दा हो जाता है। मैच के सेकेण्ड हॉफ शुरू होते ही सूर्या बहुत तेजी से खेलने लगता है। और देखते ही देखते भारत २-१ से मैच जीत जाता है। भारत की यह जीत का सफर यहाँ से शुरू होकर फाइनल तक जाता है। फाइनल मैच से पहले कर्णिका सूर्या से मिलने आती है और कहती है- क्या बात है सूर्या आजकल मिलते भी नहीं हो। पर सूर्या उसकी बात को अनसुना करते हुए कहता है- काश, मैं पहले समझ पाता कि व्यक्ति रूप और यौवन में फँसकर बर्बाद हो जाता है तो आज मैं अपने दोस्त की नजरों में नहीं गिरता। दोस्त और प्यार में यही फर्क है कि महीनों बाद मिलने पर दोस्त गले लगाता है और प्यार नजरें चुराता है। और रही बत्तमीज कहने की बात हर लड़की अपने को अच्छा और दूसरों को बत्तमीज समझती है। इसलिए आगे से फिर कभी किसी के दोस्त को बत्तमीज मत कहना, एक बात याद रखना तुम अपनी जगह हो और दोस्त अपनी जगह हैं, अब तुम जा सकती हो। फिर कभी मेरे सामने मत आना। इतना कहकर सूर्या मैदान की तरफ बढ़ जाता है। मैच शुरू होते ही सूर्या पूरे उत्साह के साथ खेलना शुरू करता है। लेकिन पूरी टीम मिलकर भी एक गोल भी नहीं कर पाती है। लेकिन वियाना की एक गलती के कारण भारत को जीत की उम्मीद की लकीरें मिल चली। भारत को एक पैनेल्टी किक मिली। सौरभ उसके पास आकर कहता है- सूर्या! जिन्दगी प्रत्येक व्यक्ति को हीरो बनने का एक मौका अवश्य देती है और यह वही अन्तिम मौका है। इस मौके को अपने हाथों से मत जाने देना। इतना सुनते ही सूर्या की आँखों में आँसू आ जाते हैं और वह रूंधे हुए गले से कहता है- मुझे माफ करना दोस्त। और इतना सुनते ही सौरभ ने उसे गले लगाकर कहा- दोस्त से माफी नहीं मांगते, गले मिलते है। चारों तरफ खड़े भारतीय खिलाड़ी उन्हें देखकर तालियों से उनका स्वागत करते हैं। उसके बाद सूर्या आँसू पोछते हुए फुटबॉल के पास आकर खड़ा हो जाता है। सौरभ चिल्लाकर कहता है- सूर्या गोल करो और देश को जीत दिला दो। सूर्या ने भी पूरे जोश के साथ किक मारकर शानदार विजयी गोल अपने नाम किया **'और हम जीत गये।'**

इतने में आकाश कहता है- वाह! सुधरा तो, मगर देर से। तभी वहाँ पर सूर्या आ जाता है, और सौरभ गले लगते हुए कहता है। आओ सूर्या तुम्हारी ही बात कर रहे थे। फिर तीनों घर की तरफ चल पड़ते हैं।

शिक्षा- खुद पर और अपनों पर भरोसा करने वाला और मेहनती व्यक्ति ही सफल होता है।

- शास्त्री द्वितीय वर्ष,
गुरुकुल पौन्धा, देहरादून (उ.ख.)

राष्ट्रीय सेवा योजना का सप्तदिवसीय विशेष शिविर सोल्लास सम्पन्न

पौन्धा, देहरादून : पौन्धा स्थित श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा देहरादून राष्ट्रीय सेवा योजना की ईकाई का सप्तदिवसीय विशेष शिवर का उद्घाटन १९ मार्च २०१९ को अभिगृहीत ग्राम पौन्धा में किया गया। इस विशेष शिविर के कार्यक्रम में ५० स्वयंसेवियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में स्वयंसेवियों ने मतदान जागरुकता रैली, साक्षरता अभियान रैली एवं स्वच्छता अभियान रैली का आयोजन किया गया। इस विशेष शिविर का समापन २५ मार्च २०१९ को किया गया, जिसमें कार्यक्रम का संचालन ईकाइ के कार्यक्रम अधिकारी चन्द्रभूषण जी ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली से आचार्य यज्ञवीर जी उपस्थित रहे, आचार्य यज्ञवीर जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज लोगों को जागरुकता करने में स्वयंसेवियों की महती भूमिका है। स्वयंसेवियों को इस भावना से पूर्ण होकर कार्य करते रहना चाहिए। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य आचार्य डॉ. धनञ्जय जी ने स्वयंसेवियों को उनके कार्यो के लिए उत्साहित करते किया और श्रेष्ठ स्वयंसेवियों को सम्मानित किया। इस कार्यक्रम में स्वयंसेवियों ने भी अपने भाषण, भजन व कविओं को सुनाया। इस अवसर पर मास्टर मांगेराम, शिवकुमार, ओमप्रकाश, अनूप शर्मा, आशीष आदि उपस्थित रहे।

प्राचीनकाल में गुरुकुल शिक्षा पद्धति

❑ ब्र. सत्यप्रकाश आर्य...✍

शिक्ष् विद्योपादाने धातु से **गुरोश्च हलः** सूत्र से अ प्रत्यय तथा स्त्री टाप् प्रत्यय करने पर शिक्षा शब्द निष्पन्न होता है। शिक्षा का अर्थ है विद्या को ग्रहण करना व जो-जो पदार्थ जिस रूप में विद्यमान है उसको वैसा मानना और समझना शिक्षा कहलाती है। पुन: हमारे मस्तिष्क को विभिन्न प्रश्न विचलित करते हैं कि शिक्षा कितने प्रकार की होती है, हमें कौन सी शिक्षा ग्रहण करनी है व कौन सी नहीं। हम इसके उत्तर के साथ-साथ ही सीधे प्राचीन काल में जाकर गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को देखते है। प्राचीन काल में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली सबसे अच्छी मानी जाती थी। यह राजनियम हुआ करता था कि सभी लोग अपने बालकों और बालिकाओं को पढ़ने के लिए आचार्यकुलों में भेजते थे और वे माता पिता से पृथक् रहते हुए अपने आचार्यो से विद्या ग्रहण करते थे। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार '**मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेदः**'[१] अर्थात् जब तीन उत्तम शिक्षक एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवें तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। जिसप्रकार माता अपने बच्चे को गर्भ में धारण करती है। वैसे ही आचार्य शिष्यों को अपने गर्भ में धारण कर उन्हें बाह्य प्रभावों से मुक्त रखता है जैसा कि वेदमन्त्र में भी कहा है- '**आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः**'[२] इसके साथ-साथ ही ब्रह्मचर्य के तप से ही राजा राष्ट्र की रक्षा करने में समर्थ होता है। ब्रह्मचर्य के तप से ही देवों ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी, और ब्रह्मचर्य द्वारा ही इन्द्र ने देवों को सुख समृद्धि से परिपूर्ण कर दिया था जो कहा भी है-

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत॥[३]

इत्यादि प्रमाणों से सिद्ध होता है। प्राचीन काल में गुरुकुलों में किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जाता था। सब बालकों के समान ही बालिकाएं भी आचार्यकुलों में रहकर ब्रह्मचर्य पूर्वक विद्या का अध्ययन करती थी। ब्रह्मचर्य द्वारा ही कन्या युवा पति को प्राप्त करती थी।

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्॥[४]

गुरुकुलों में शिक्षा का प्रारम्भ सर्व प्रथम उपनयन संस्कार द्वारा होता था। इस अवसर पर बालक और बालिकाओं को यज्ञोपवीत धारण कराया जाता था। तीन धागों से बना हुआ यज्ञोपवीत जो कि तीन ऋणों का प्रतीक माना जाता है, जिसे धारण करते थे। ये तीन ऋण मातृऋण, पितृऋण और देवऋण है। वैदिक साहित्य में यज्ञोपवीत को परमं पवित्रं, आयुष्य और शुद्ध कहा गया है-

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं
बलमस्तुतेजः॥[५]

उसे धारण करने के अनन्तर ही बालक बालिकाएं आचार्यकुल में निवास करने के अधिकारी हो सकते थे। आचार्यकुल में निवास करते हुए ब्रह्मचारियों को प्रातः सायं अग्निहोत्र करना होता था। अत: उन्हे '**अग्नि**' का ब्रह्मचारी भी कहा जाता है। आचार्यकुल में शिक्षा प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचारियों को कोई शुल्क नहीं देना होता था। वे '**भैक्षचर्या**' (भिक्षा) द्वारा ही जो उन्हें फल वस्त्रादि प्राप्त होता था सब आचार्य के सम्मुख प्रस्तुत कर देते थे। सब कुछ जो प्राप्त होता था उसमें से ही आचार्यो उपाध्यायों और उनके शिष्यवर्ग का निर्वाह प्रधानतया होता था। ब्रह्मचारियों की आवश्यकता अधिक नहीं होती थी। अपनी आवश्यकता की वस्तुओं को जो भिक्षा से मिलती थी उसमें ही सन्तुष्ट हो जाते थे। उस समय में गौ आदि पशु भी अत्यधिक संख्या में रखे जाते थे, जिनका पालन भी ब्रह्मचारियों द्वारा ही होता था। दूध, घी और मक्खन आदि की आवश्यकता इन गौ आदि के द्वारा ही पूरी हो जाया करती थी। आचार्यकुल में जो शिक्षक ब्रह्मचारियों को विद्याध्ययन करवाते थे उनके अनेक वर्ग होते थे। इन

शिक्षकों में सर्वोच्च स्थिति आचार्य की मानी जाती थी। आचार्य उसे कहते है जो - **'आचार्यः आचारं ग्राहयति, आ चिनोति अर्थान् आचिनोतिबुद्धिमिति'** जो सदाचार का ग्रहण करायें, अर्थों को चुन चुनकर बुद्धि में प्रेरित करावें वह आचार्य कहलाता है। एक अन्य प्रमाण मनुस्मृति के अनुसार आचार्य का अर्थ जो द्विज शिष्य का उपनयन करावें उसे वेदों का अध्ययन करावें और साथ ही साथ कल्प वेदाङ्ग की उनके रहस्यों सहित शिक्षा दे उसे आचार्य कहते है-

उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विजः।
सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते॥[६]

प्राचीन भारत में शिक्षक न केवल सदाचारी, तपस्वी, त्यागी और विद्वान् हुआ करते थे अपितु अभिमान उन्हे दूर-दूर तक न छू सकता था। आचार्यकुलों में गुरु और शिष्य में अतिघनिष्ट सम्बन्ध रहा करता था। शिष्य के लिए आचार्य ही पिता था। निरुक्त में कहा गया है कि शिष्य गुरु को अपना माता-पिता माने और किसी भी दशा में उसके प्रति द्रोह भाव न रखें। मनु के अनुसार शुश्रुषा शिष्य का आवश्यक गुण है। शुश्रुषा के बिना शिष्य के लिए विद्या प्राप्त कर सकना सम्भव ही नहीं है। जिस प्रकार (फावड़े) से जमीन खोदकर जल प्राप्त किया जा सकता है वैसे ही शुश्रुषा द्वारा शिष्य गुरु से विद्या प्राप्त करता है-

यथा खनन् खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति।
तथा गुरुगतां विद्यां शुश्रुषुरधिगच्छति॥[७]

गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति के अन्तर्गत अनेक प्रकार की विद्याएं पढाई जाती थी। ये विद्याएं चारों वेद, इतिहास, पुराण, व्याकरण, धनुर्विद्या, राशिविद्या, तर्कशास्त्र, ब्रह्मविद्या, सर्पविद्या, युद्धविद्या, ज्योतिष, और चिकित्साविज्ञान आदि विद्याओं का अध्ययन करवाया जाता था। इन विद्याओं में से दो-तीन विद्याएं ऐसी है जो कि आधुनिक समय में लुप्त हो चुकी है। नगरों से दूर अरण्यों में स्थित आश्रमों के अतिरिक्त नगरों में भी अनेक शिक्षण संस्थाएं प्राचीन भारत में विद्यमान थी। वाल्मीकीय रामायण में अयोध्या के ऐसे अनेक शिक्षणालयों का वर्णन है जिनमें वेदशास्त्र तथा धर्म के अतिरिक्त अन्य ज्ञान विज्ञान एवं व्यावहारिक विषयों की शिक्षा दी जाती थी। अयोध्या के इन शिक्षणालयों में विद्याध्ययन करने वाले ब्रह्मचारियों की संख्या इतनी अधिक थी कि उन्होनें अपना पृथक् संघ बनाया हुआ था जो कि वाल्मीकि रामायण में **'मेखलिनां महासंघः'** कहा गया है। राम के वनवास के लिए जाते समय इस संघ के सदस्य कौशल्या के पास सहायता या भिक्षा के लिए आये थे और राम ने उन सबको एक-एक सहस्त्र निष्क(उस समय की मुद्रा) प्रदान कराये थे।

मेखलिनां महासंघः कौशल्यां समुपस्थितः।
तेषां सहस्त्रं सौमित्रे प्रत्येकं सम्प्रदापय॥[८]

प्राचीन काल में विद्या ग्रहण करने के चार उपाय थे जो कि शिक्षा प्राप्त के अत्यन्त उपयोगी है वे शिक्षा शारीरिक, बौद्धिक व्यावहारिक और नैतिक। इन सब में ब्रह्मचारी पूर्ण निपुण हुआ करते थे। अतः इन सब विद्याओं को पूर्ण करने के पश्चात् अन्त में उनका दीक्षान्त समारोह हुआ करता था जो कि समावर्तन संस्कार नाम से जाना जाता है। ये संस्कार होने के बाद ही विद्यार्थी अपने-अपने घरों को वापस लौटते थे और गृहस्थाश्रम में प्रवेश के अधिकारी होते है। समावर्तन के समय आचार्य द्वारा शिष्यों को उपदेश दिया जाता था कि सदा सत्य भाषण करना, स्वाध्याय में कभी भी प्रमाद न करना, माता पिता तथा गुरुजनों की सेवा में कभी भी आलस्य तन्द्रादि न करना इत्यादि सब शुभाशीष वचनों से उनका संस्कार हुआ करता था। आचार्यकुलों का कार्य केवल विविध विधाओं की शिक्षा देना ही नहीं था अपितु वहाँ विद्यार्थियों को सत्यनिष्ठ और सदाचारी बनाने का भी प्रयत्न किया जाता था।।

सन्दर्भ सूची-

१. शतपथ ब्राह्मण १४.६.१०.५ २. अथर्ववेद ११.५.३
३. अथर्ववेद ११.५.१९ ४. अथर्ववेद ११.५.१८
५. पारस्कर गृह्यसूत्र २.२.११ ६. मनुस्मृति २.१४०
७. मनुस्मृति २.२१८ ८. वाल्मीकि रामायण २.३२.२१

-शास्त्री तृतीय वर्ष
गुरुकुल पौन्धा देहरादून

भारत में उत्पन्न सब लोगों को देश की उन्नति तन, मन व धन से करनी चाहिये

❑ मनमोहन कुमार...

हम बहुधा देखते कि कुछ स्वदेशवासियों व संस्थाओं में स्वदेश भक्ति कम है अथवा नहीं है। देश और मातृभूमि को सबसे ऊंचा व बड़ा नहीं माना जाता। ऐसे भी लोग हैं जो विदेशी मत–मतान्तरों व उनके अनुसार जीवन जीने में ही अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। ऐसे लोगों का आचार, विचार व व्यवहार विदेशी लोगों के समान देखा जाता है। यहां तक देखने में आता है कि बहुत से लोगों ने अपने खान–पान व विवाह आदि के नियम भी विदेशी लोगों का अंधानुकरण कर उनके अनुरूप बना लिये हैं। ऐसे लोगों में अधिकांश अपने देश के ज्ञानवान व मानवता के पुजारी ऋषि–मुनि आदि पूर्वजों की प्रशंसा तो क्या करेंगे अपितु उसके स्थान पर इनकी पेट भर कर निन्दा करते हैं। ऐसे लोगों को यूरोप आदि देशों के लोग व उनके मिथ्या आचार–विचार भी भारत के महर्षियों के मानवता के हितकारी नियमों से अधिक अच्छे लगते हैं और यह उनकी दिल भर कर प्रशंसा करते हैं। इनका भ्रम व मिथ्या विश्वास है कि आर्यावर्तीय लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं। इन लोगों को वेदों, दर्शन एवं उपनिषद आदि ग्रन्थों का कोई ज्ञान नहीं होता परन्तु विदेशी लोगों की देखा देखी इन सत्य शास्त्रों की प्रशंसा छोड़कर निन्दा करने में प्रवृत्त रहते हैं। ऐसे आचार–विचारों की समालोचना करते हुए महर्षि दयानन्द जी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में लिखते हैं कि भला जब आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुए हैं, इसी देश का अन्न–जल खाया पीया, अब भी खाते–पीते हैं, तब अपने माता–पिता–पितामह के मार्ग को छोड़ दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना, इस देश की संस्कृत विद्या से रहित होने पर भी अपने को विद्वान प्रकाशित करना, अंग्रेजी आदि पढ़कर पण्डिताभिमानी होकर अविवेकपूर्वक व्यवहार करना मनुष्यों का स्थिर और वृद्धिकारक काम क्योंकर हो सकता है?

जापान, चीन, रूस, अमेरिका व इंग्लैण्ड आदि देशों के लोगों को देखते हैं तो उनमें स्वदेशभक्ति का गुण समग्रता कड़ी दृष्टि से शायद हमसे अधिक दिखाई देता हैं। वहां जो दूसरे देशों के लोग रहते हैं वह भी उन देशों के नियमों व आचार विचारों का पालन करते हैं परन्तु भारत में ऐसा देखने में नहीं आता। इन बातों पर विचार करने पर हमें लगता है कि यह वेदों व प्राचीन भारतीय संस्कृति के संस्कारों के न होने के कारण होता है। जो व्यक्ति जिस देश में उत्पन्न हुआ है उसे वहां के पूर्वजों की परम्पराओं व ज्ञान एवं दर्शन का सूक्ष्मता से अध्ययन करना चाहिये। विदेशी मतों व स्वदेश के धार्मिक व सांस्कृतिक ज्ञान व परम्पराओं का अध्ययन भी करना चाहिये और सत्य को अपनाना व असत्य का त्याग करना चाहिये। हमारे देश में न तो ऐसे नियम बनाये गये हैं और न इसके प्रति जागृति ही देखने को मिलती है। सभी लोग आज कल सुख सुविधाओं और भोग प्रदान संस्कृति ड्रिंक, ईट एण्ड बी मैरी को महत्व देते हैं। वह भूल जाते हैं कि ड्रिंक एण्ड ईट उनके हाथ में है परन्तु इसका परिणाम बी मैरी उनके अपने हाथ में नहीं है। इस विचारधारा का परिणाम अधिक महत्वाकांक्षी होना, दुःख, रोग व अल्पायु आदि के रूप में सामने आता है।

सबसे उत्तम मनुष्य वह होता है जो बहुपठित हो और प्राचीन ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन करता हो। यह सत्यासत्य का निर्णय करने के लिये आवश्यक है। जिस मनुष्य ने अन्य ग्रन्थों के अलावा वेद, दर्शन, उपनिषद, सत्यार्थप्रकाश, प्रक्षेपरहित मनुस्मृति सहित शुद्ध रामायण एवं शुद्ध महाभारत आदि ग्रन्थों को भी पढ़ा है, वही विवेकी बन सकता है। इन ग्रन्थों के अध्ययन से ही मनुष्य सत्य व असत्य को जान सकता है। स्कूली किताबों व ज्ञान–विज्ञान को पढ़कर मनुष्य विद्वान व विवेकी मनुष्य नहीं बनता। इसके लिये स्वाध्याय अत्यन्त आवश्यक है। यदि कोई अधिक ग्रन्थ न पढ़ सके तो उसे सृष्टि विषयक तथ्यों एवं अपने कर्तव्यों के ज्ञान के लिये सत्यार्थप्रकाश तो पढ़ना ही चाहिये। यदि पूरा न पढ़ सके तो इस ग्रन्थ के आरम्भ के दस या ग्यारह समुल्लास तो अवश्य ही पढ़ने चाहिये। इसके बाद वह आगे पढ़कर अन्य विद्या–अविद्यायुक्त मतों का अध्ययन भी कर सकता है और अपनी विवेक बुद्धि से सभी मतों के गुण व दोषों का निर्णय कर सकता है। जहां तक ईश्वर व जीवात्मा विषयक सत्य ज्ञान का प्रश्न है वह तो केवल वेद, उपनिषद, दर्शन, सत्यार्थप्रकाश, आर्याभिविनय, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों को पढ़कर ही प्राप्त होता है। इसके साथ ही मनुष्य को विशिष्ट विद्वानों के भिन्न–भिन्न विषयों पर व्याख्यान भी सुनने चाहियें। हमें अपने जीवन में स्वाध्याय, विशिष्ट विद्वानों की संगति एवं उपदेश श्रवण का अवसर मिला है। हमें इससे लाभ हुआ है। यदि हम उपर्युक्त ग्रन्थों का स्वाध्याय–अध्ययन व सच्चे निस्वार्थी विद्वानों की संगति नहीं करेंगे तो हम सत्य ज्ञान को कदापि प्राप्त नहीं हो सकते। यही कारण है कि यत्र–तत्र की अनेक भाषाओं की पुस्तकें पढ़कर कोई ज्ञानी देखने में नहीं आ रहा है। वैदिक साहित्य के अध्ययन एवं योगाभ्यास आदि से मनुष्य ज्ञानी होता है।

हम यह भी अनुभव करते हैं कि वर्तमान युग का पठित व्यक्ति कर्म–फल सिद्धान्त से सर्वथा अपरिचित वा अनभिज्ञ है। कर्म–फल सिद्धान्त को जानने के लिये हमें ईश्वर, जीवात्मा और इस सृष्टि की उत्पत्ति के कारण, जीवात्मा के उद्देश्य व लक्ष्य को जानना होगा। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वान्तर्यामी, जीवों को उनके पूर्वजन्मों को कर्मानुसार जन्म देने वाली व उनके भूतकाल व वर्तमान काल के कर्मों का सुख–दुःख रूपी फल देने वाली सत्ता है। उसी ईश्वर ने जीवों के कल्याण व उनके कर्मानुसार उन्हें सुख–दुःख व मोक्ष प्रदान करने के लिये इस सृष्टि की रचना की है। वही ईश्वर इसका पालन कर रहा है तथा उसी से इस सृष्टि की यथासमय प्रलय होनी है। प्रलय के बाद निर्धारित अवधि व्यतीत होने पर परमात्मा पुनः अपने सर्वज्ञ ज्ञान व सामर्थ्य के अनुसार सृष्टि की रचना कर अमैथुनी सृष्टि में जीवों को जन्म देते हैं और मनुष्यों को वेदज्ञान भी सुलभ कराते हैं। सृष्टि का दूसरा अनादि व नित्य पदार्थ जीवात्माएक चेतन, अणु–परिमाण, एकदेशी, सूक्ष्म, आंखों से न दीखने वाला, अल्पज्ञ, इच्छा–द्वेष–सुख–दुःख से युक्त, सुख प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील एक अनादि, नित्य, अविनाशी, अनुत्पन्न, अमर, सनातन सत्ता है। ईश्वर संख्या में एक है और जीवात्माओं की संख्या अनन्त है। पूर्वजन्म के कर्मानुसार ईश्वर जीवों को इनकी जाति (मनुष्य, पशु, पक्षी आदि), आयु व भोग (सुख–दुःख) निर्धारित कर भिन्न भिन्न योनियों में जन्म देता है। मनुष्य जन्म भोग व अपवर्ग (मोक्ष) के लिए होता है। अपवर्ग मोक्ष को कहते हैं जो योग–साधना व सत्कर्मो को करके और ईश्वर का साक्षात्कार करने पर प्राप्त होता है। प्रकृति सत्व, रज व तम गुणों वाली त्रिगुणात्मक सूक्ष्म परिणामिनी व विकारिणिनी सत्ता है। यह प्रकृति ही सृष्टि का उपादान कारण है। ईश्वर इस प्रकृति को ही अपने

ज्ञान व शक्ति से रूप व नाम वाली सृष्टि की रचना करते हैं। यह जान लेने के बाद कर्म–फल सिद्धान्त समझा जा सकता है। जीवात्मा अनादि, अविनाशी सत्ता होने के कारण बार–बार कर्मानुसार जन्म व मृत्यु को प्राप्त होकर पूर्वजन्म–जन्म–परजन्म के चक्र में फंसी रहती है। मनुष्य योनि उभय योनि होती है जिसमें मनुष्य शुभ–अशुभ कर्मों को करता है। ईश्वर न्यायाधीश के रूप में उसके प्रत्येक कर्म का फल देने के लिये उसे उसके कर्मों के अनुसार नाना योनियों में जन्म देते हैं। ईश्वर द्वारा जीव के प्रत्येक शुभ व अशुभ कर्म का सुख व दुःख रूपी फल देना ही कर्म–फल सिद्धान्त कहलाता है। यह शुभ कर्मों का शुभ अर्थात् सुख रूपी तथा अशुभ कर्मों का दुःख के रूप में होता है।

कोई भी मनुष्य दुःख नहीं चाहता। दुःख दूर करने के लिये विद्या प्राप्ति की आवश्यकता सहित दुष्कर्मों व अशुभ कर्मों का त्याग करना है। तभी जन्म जन्मान्तरों में सुख व शान्ति मिलेगी। यदि हम विद्या प्राप्ति व शुभ कर्मों का आचरण व अशुभ व असत्य कर्मों का त्याग नहीं करेंगे तो यह निश्चित है कि हमारा यह जन्म व परजन्म निश्चय ही दुःखों से पूरित होगा। अतः मनुष्यों को मत–मतान्तरों के दुष्चक्र में न फंस कर सत्य मत व वेदों की सत्य विचारधारा का अध्ययन कर सच्चे ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि के स्वरूप को जानकर सद्कर्म व ईश्वरोपासना, परोपकार, यज्ञ, दान व विद्याप्रचार के कार्यों को ही महत्व देना चाहिये। इसी से उनका कल्याण हो सकता है।

देश के प्रायः सभी लोग सत्य ज्ञान वा विद्या से दूर हैं। इस कारण वह अपने कर्तव्यों से भी अपरिचित हैं। बहुत से लोग स्वदेश में उत्पन्न होकर अपने देश की धरती व इसकी वायु का सेवन करते हैं। इनसे उत्पन्न अन्न, दुग्ध, फल, निवास व सभी प्रकार की सुविधायें यहीं से प्राप्त करते हैं परन्तु अज्ञानवतावश अपने कर्तव्यों का निर्वाह न कर मिथ्या चक्रों में फंस जाते हैं। ऋषि दयानन्द ने सत्य व असत्य के स्वरूप से परिचित कराने तथा कर्तव्यों की प्रेरणा करने के लिये ही वेदों का प्रचार किया था और आर्यसमाज की स्थापना की थी। लोगों की बहुधा सत्य व वेद में प्रवृत्ति न होने के कारण देशवासियों ने वैदिक सत्य सिद्धान्तों पर ध्यान नहीं दिया। वह लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति व धन, दौलत, सुख व सुविधाओं से आकर्षित होकर उसी में बह गये। इसका परिणाम यह हुआ कि देश में तेजी से जनसंख्या बढ़ी और सब लोगों को भोजन, वस्त्र, शिक्षा, निवास, चिकित्सा, रोजगार आदि सुविधायें समान रूप से न्यायपूर्वक सभी को नहीं मिल सकीं। आज देश में बड़ी संख्या में धन कुबेर हैं तो वहीं प्रतिदिन भरपेट भोजन से वंचित 20 करोड़ से अधिक लोग हैं। यह संख्या अनेक देशों की जनसंख्या से भी अधिक हैं। देश के धनाड्य लोगों को इन निर्धन व साधनहीन लोगों की चिन्ता नहीं है। वर्तमान व्यवस्था से शायद सबको सामाजिक न्याय मिलना सम्भव नहीं है। इस स्थिति में इतना प्रचार तो सबको करना ही चाहिये कि जो इस देश में उत्पन्न हुआ है वह इस देश के प्रति अपने कर्तव्यों को जाने और विदेशी कुचक्रों व हानिकारक विचारधाराओं में न फंसे। देश से अविद्या व अन्धविश्वास भी दूर होने चाहिये और सभी सामाजिक परम्परायें सबके लिये कल्याणकारी एवं हितकारी होनी चाहिये जिससे भविष्य में हम उन दुःखों से बच सकें जो इससे पूर्व गुलामी के दिनों में हमें झेलने पड़े हैं। देश तभी संसार का उन्नत देश बनेगा जब इसके सभी लोग देशभक्त एवं स्वदेश के पूर्वज ऋषि–मुनियों तथा राम–कृष्ण–दयानन्द पर गौरव करने वाले होंगे।

–१६६ चुक्खूवाला–२
देहरादून–२४८००१

सोलह-संस्कार

❑ प्रेम सिंह 'प्रेम'...✍

जीवन में होते हैं वैदिक सोलह संस्कार।
ऋषि दयानंद कहते यह है जीवन के सार।
पहला संस्कार गर्भाधन कहाये।
कैसी हो संतान बताये।
उत्तम सोच बनाओ उत्तम होगा परिवार।
जीवन में होते हैं वैदिक सोलह संस्कार॥१॥
दूजा संस्कार पुंसवन कहाये।
तीन माह का संयम बताये।
संयम नियम से रहना शिशु विकास को नार।
जीवन में होते हैं वैदिक सोलह संस्कार॥२॥
तीजा संस्कार सीमांत कहाये।
माँ रहे खुश यह बात बताये।
प्रसंग चित्रा मन प्यार का घर में हो व्यवहार।
जीवन में होती है वैदिक सोलह संस्कार॥३॥
चौथा संस्कार नवजात शिशु का।
जात कर्म में है नाम इसी का।
बल बुद्धि विद्या आशीष देते हैं नर नार।
जीवन में होते हैं वैदिक सोलह संस्कार॥४॥
पंचम नामकरण कहलाये।
कुल पुरोहित शिशु नाम सुझाये।
ग्यारहवें दिन करते उत्सव मिलकर के परिवार
जीवन में होते है वैदिक सोलह संस्कार॥५॥
जन्म से चौथे महीने में होता छठवां संस्कार।
मर्यादा अरु लोक भोग की आस करें परिवार।
निष्क्रमण नाम से इसको जाने संसार
जीवन में होते हैं वैदिक सोलह संस्कार॥६॥
छठवें महीने में शिशू को अन्न खिलाते।
अन्नप्राशन इस संस्कार का ऋषिवर नाम बताते।
खेले बालक उछल कूद कर खुश होता परिवार।
जीवन में होते हैं वैदिक सोलह संस्कार॥७॥
चूड़ाकर्म आठवां संस्कार कहलाये।
शारीरिक विकास को शिशु का सिर मुंडन करवाये।
विद्या ग्रहण का नौवां संस्कार जीवन का है सार।
जीवन मैं होते है वैदिक सोलह संस्कार॥८॥
दसवें संस्कार में कर्ण छेद करवायें।
ग्यारहवां उपनयन बतावे।
द्वादश मैं वेदों का ज्ञान करें स्वीकार।
जीवन में होते हैं वैदिक सोलह संस्कार॥९॥
विद्या ग्रहण कर गुरुकुल से आया।
केशांत संस्कार नाम बताया।
भला बुरा पहचान यह तेरहवाँ संस्कार।
जीवन में होते हैं वैदिक सोलह संस्कार॥१०॥
चौदहवां समावर्तन कहाया।
अच्छे बुरे का आधर बताया।
कठिन परीक्षा जीवन की माने यह संसार।
जीवन में होते है सोलह वैदिक संस्कार॥११॥
परिणय सूत्रा पंच दस को कहते।
सात वचन वर वधू संग रक्षने लेते।
सोलहवां होता है अंत्येष्टि संस्कार।
जीवन में होते है सोलह वैदिक संस्कार॥१२॥

- आगरा

www.pranwanand.org

आधुनिक युग में गुरुकुल शिक्षा की उपयोगिता

❑ ब्र. अनिरुद्ध आर्य...✍

सम्पूर्ण विश्व में विद्वानों ने एक मत से स्वीकार किया है कि शिक्षा के बिना मनुष्य केवल पशु ही है और वह मनुष्य के रुप में चरता है। स्वयं भतृहरि ने भी लिखा है-

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः। ते मर्त्यलोके भुवि भार भूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।[१]

शिक्षा से तात्पर्य केवल एसी शिक्षा से नही है। जो केवल हमें अर्थ दिलाये, अपितु चतुर्वग की प्राप्ति कराये वही शिक्षा शिक्षा है। शिक्षाओं में भी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की उपयोगिता अवर्णनीय है। प्राचीन काल में यही शिक्षा थी जिससे कि अश्वघोष गर्व से यह कहता था कि -

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिवाग्निर्ना न स्वैरीस्वैरीणी कुतः।।

मेरे राज्य में ना तो कोई चोर है, ना ही कोई कंजूस है, ना ही कोई शराबी है, न ही अग्निहोत्र न करने वाला मूर्ख है, कोई व्यभिचाी भी नहीं है, तो वेश्या कहाँ से होगी। तथा यही शिक्षा थी जिनके बलबूते पर बाल्मीकि ने रामायण में लिखा है कि -

तस्मिन् पुरवरे हृष्टा धर्मात्मानो बहुश्रुताः।
नरास्तुष्टा धनैः स्वैः स्वैरक्षुब्धा सत्यवादिनः॥[२]
कामी वा न कदर्या वा नृशसः पुरूषः क्वचित्।
द्रष्टुं शक्यमयोध्यायां नाविद्वान न व नास्तिकः॥[३]
नानाहिवाग्निर्नायज्वा न क्षुद्रो वा न तस्करः।
कश्चिदासीदयोध्यायां न चावृतो न संकरः॥[४]

प्राचीन काल में शिष्य गुरु के पास समित्पणि होकर जाता है तथा गुरु से यहीं विनती करता था कि मुझे ज्ञान के प्रकाश से आलेकित करें, प्राचीन काल में गुरुकुल **उपध्वरे गिरीणांसङ्गमें च नदीनाम्। धिया विप्रोऽअजायत।।**[५] इस उक्ति के अनुसार नदियों के संगम पर शान्त, स्वच्छ, पर्वतो की तलहटी पर होते थे। तथा यही पर विप्र अर्थात् बुद्धिमान लोग बुद्धिबल बढाते हैं। प्राचीन काल में यदि एक रास्ते से सामने की ओर से राजा आये और इधर से स्नातक आये तो राजा का कर्तव्य होता था कि वह ब्रह्मचारी कि लिए रास्ता छोड दे। मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम जी योगेश्वर श्री कृष्ण जी तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती ये सब देश के कर्णाधार गुरूकुल के ही ब्रह्मचारी थे, इसलिए आज के परिपेक्ष्य में कोई भी व्यक्ति उस काल के समाज के समान परिकल्पना नहीं कर सकता, विचारने पर एतादृश समाज की उन्नति के मूल में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली ही दृष्टिगोचर होती है। परन्तु आज के समाज की दशा कुकृत्यों के कारण शोचनीय है न जाने कितने नरपिशाच उपने स्वार्थो के कारण सामाजिलक व्यवस्था को तार तार कर रहे हैं। प्रायः सर्वत्र अकर्मण्यता स्वार्थ परायणता निर्धनता कामुकता विषयासक्ति, दुराचार, भ्रष्टाचार, बलात्कार, परधनहरण, आतंकवाद, जातिवाद, अशिक्षा, नैतिकपतन, कुटिल राजनीति इत्यादि दोष पद-पद पर देखे जा रहे है अद्यतनीय शिक्षा संस्थानों से प्रतिवर्ष लाखों करोडों छात्र स्वकीय शिक्षा पूर्ण कर सामाजिक क्षेत्र में आते है किन्तु क्या वहां किञ्चित मात्र भी माता पिता में भक्ति गुरुजनों में आदरभाव स्वदेश में अनुरक्ति, कर्तव्य कार्य के प्रति अनुराग है? नहीं परन्तु केवल अर्थाशक्ति है और कामनापूर्ति तथा व्यसनों में अत्यादर। यहीं नहीं शहरीसमाज में नित्य बच्चों तक के साथ बलात्कार कर गन्दे नाले में फेक देने बहसी, निठारी, नोएडा की ओर किडनी बेच देने की, गुडगाँव जैसी घृणित अनैतिक आचरणों की घटनाएं है। लूट-पाट और डकैतियां है। बच्चों के अपहरण और फिरौतियां है। दूसरों की सम्पत्ति पर अधिकार जमाने की कोशिशे है। असहिष्णुता है। आत्म हत्याएं है। असमानता ऐसी है कि एक तरफ कठोर परिश्रम है परनतु भरपेट पूरे परिवार के लिए रोटी

नहीं दूसरी तरफ गगनचुम्बी कोठियां है। जिनमें भोग और विलासिता है। शराब और जूए का दुस्चक्र है। आलस्य प्रमाद है। स्वार्थी राक्षसीवृत्ति है। अर्थासक्ति ऐसी है कि उसके सामने कोई पिता, भाई, बहन आदि का सम्बन्ध कुछ नहीं। प्राणीमात्र के लिए दया का अभाव है। प्रकृति का देहन इतना कि पर्यावरण कितना हि अशुद्धहो उससे कुछ लेना देना नहीं। न देश प्रेम है। न दया धर्म है। सत्यवादिता परोपकार आदि गुण कोसो दूर है। राष्ट्र की सम्पत्ति को अपनी मांगो के कारण कूडे के ढेर के समान अग्निसात कर दिया जाता है। केवल अधिकारो की बात होती है। कर्त्तव्यभावना की नहीं। परिवार और समाज टूट रहे है। समाज में पनप रहे ऐसे अनेक दोष नित्य समाचार पत्रों की मुख्य पंक्तियां बनते है। आज के समय को देखते हुए यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से किया जा सकता है कि जितना अधिक आज की शिक्षा का प्रभाव बढ रहा है, घर-घर विद्यालय खुल रहे है? उतना ही मानव का मानसिक प्रदूषण बढ रहा है। आज के शिक्षित व्यक्तियों की गाँव के बीस वर्ष पुराने अनपढ व्यक्तियों से तुलना करें तो वें एक दूसरे से प्यार करने वाले, सुख-दुख को बांटने वाले, परोपकारी आदि गुणो वाले थे और ये शिक्षित होकर अधिक बेईमान छल-कपटी, चोर, स्वार्थी ईर्ष्यालु हो गये है। इसलिए आज की गर्हित सामाजिक स्थिति और शिक्षा व्यवस्था अन्योन्याश्रित हुई प्रमुखत: वर्तमान विसंगतियों का परिणाम कही जा सकती है। जिसे अतिशयोक्ति नहीं कहा जा सकता। क्योकि यहां हृदयविहीन, भावशुन्य, मशीनी मानव बनाने की सक्ति तो है परन्तु मानवनिर्मात्री शक्ति नही। सामाजिक स्थिति को देखने से यह स्पष्ट है कि आधुनिक शिक्षा पद्धति में वह शक्ति वा उद्देश्यों की पूर्ति की योग्यता प्रतीत नहीं होती जिससे मानव में मनुष्यता के बीज आरोपित किये जा सके। साथ ही शारीरिक मानसिक और आत्मिक बल भी बढाया जा सके। वर्तमान युगीन शिक्षा के उद्देश्य तो केवल ऐसी शिक्षा को देना है जिससे अधिक से अधिक धन का आगम हो और उसी के लिए बौद्धिक विकास की परिकल्पना है। अत: आधुनिक शिक्षा पद्धति अनेक समस्याओं की जड है। जिसका मूलोच्छेद जब तक नही किया जायेगा तब तक समस्त समाज को शिक्षित और मानवोचित गुणों का उसमें आधान करवाना कैसे भी सम्भव नहीं होगा। मनुष्य के केवल बाह्य स्वरूप को सुधारने का कार्य आज की शिक्षा का है। सुधारने का कार्य आज की शिक्षा का है। इसलिए यदि समाज में मानवता लानी है प्रकृति के प्रदूषण को बचाना है, बच्चो के विद्यालय में आवागमन हेतु लगने वाले समय को बचाना है तो गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति लागू करनी होगी जो सम्पूर्ण समाज को चाहे वह निर्धन से निर्धन हो या मध्ययम या बहुत धनाढ्य सबको अध्ययन का समान अवसर देवें। जिससे समाज में स्वाभाविक साम्यवाद आयेगा जातिवाद निर्मूल होगा कर्तव्य कर्म को महत्व दिया जायेगा, आरक्षण की आवश्यकता नहीं होगी। गुरुकुलीय शिक्षापद्धति में प्रकृति की गोद में पढने से भौतिक संसाधनों के प्रति अधिक अनुराग न होगा, आसक्ति न होगी, दिखावा न होगा, विनय भाव आयेगा और व्यक्ति वित्त, बन्धु, वय कर्म और विद्या को क्रमश: महत्त्वशाली समझेगा जबकि अब केवल वित्त को ही महत्व दिया जा रहा है। आश्रमवयवस्था में किसी सम्प्रदाय विशेष सम्बन्ध न होने से केवल '**मनुर्भव**'[६] अर्थात् मानव बन का पाठ पढाया जायेंगा प्रात: सायं सन्ध्याकाल में शरीर को पूर्ण मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रखने के लिए अग्निहोत्र और कुछ प्राणायामों के साथ अन्तर्ध्यान करवाना आपेक्षित होगा जिससे स्वदुर्गुण यदि है तो उन्हे दूर करने के लिए दृढसंकल्प शक्ति तैयार की जा सकती है। इस प्रकार जीवन स्वयमेव धार्मिक बन जायेगा क्योकि धर्म पूजा-पाठ का काम नहीं है। न वह मन्दिरों में है न गुरुद्वारों में, न मस्जिदो व चर्चो में वस्तुत: सही से कर्तव्य कर्मो को करना ही धर्म है। या जिससे समाज प्रकृति की सम्यक् संस्थिति और मोक्षरूप परम आनन्द की प्राप्ति हो, वह धर्म है। अन्त में यदि सक्षेप में कहा जायें कि सम्पूर्ण देश में गुरुकुलों में रहकर हि पढाई करवाना सुनिश्चित कर दिया जाये तो भी प्रतिदिन करोड़ो रूपयों के पर्यावरण प्रदूषण, समयहानि, जनहानि, धनहानि से

बचा जा सकता है और उक्तव्यवस्था मूर्तरूप धारण कर लेवें तो देश पुन: प्राचीन गौरव को प्राप्त कने में देर नहीं लगायेगा और कालिदास के रघुवंश – **केशैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्। बाद्धके मुनिवृत्तिनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्।।**[७] जैसे वाक्य पुन: भारत के भाल का श्रृंगार बन जायेंगे।।

सन्दर्भ सूची-

१. नीतिशतक – १३ २. रामायण – १/६/६ ३. रामायण – १/६/८ ४. रामायण – १/६/१२
५. यजुर्वेद – २६/१५ ६. ऋग्वेद – म. १०/सू. ५३/मन्त्र ६ ७. रघुवंश – १/८

– शास्त्री तृतीय वर्ष
गुरुकुल पौन्धा देहरादून

वैदिक मिशन मुम्बई का गुरुकुल सम्मेलन सोल्लास सम्पन्न

मुम्बई : वैदिक मिशन मुम्बई एवं आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई में वेदों में शिक्षा विज्ञान विषय पर गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन का भव्य आयोजन २२ से २४ मार्च २०१९ तक किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने की। इस सम्मेलन में अनेक गुरुकुलों के आचार्य एवं आचार्याओं ने भाग लिया। इस अवसर पर आर्य समाज के शीर्षनेतृत्व में स्वामी आर्यवेश जी, श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी, श्री मिठाई लाल सिंह जी, श्री प्रकाश आर्य जी, श्री विनय आर्य जी, श्री अरुण अबरोल जी, ठा. विक्रम सिंह जी आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

इस कार्यक्रम में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, आर्ष पाठविधि एवं गुरुकुलों की सम्पूर्ण व्यवस्था के सम्बन्ध में अपने अनुभवपूर्ण विचार एवं सुझाव प्रस्तुत किये। स्वामी जी ने संकेत किया कि गुरुकुलों की वर्तमान स्थिति को और अधिक मजबूत एवं क्रियाशील बनाने के लिए आवश्यक है। आर्य समाज की सभी इकाईयाँ, प्रान्तीय सभाएँ तथा सार्वदेशिक सभा गुरुकुलों को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सक्षम बनायें। आचार्यगण आन्तरिक व्यवस्था एवं अध्यापन व अन्य सभी गतिविधियों को अधिक व्यवस्थित एवं प्रभावी बनाने का प्रयत्न करें। बिना गुरुकुलों के वैदिक संस्कृति की सुरक्षा नहीं की जा सकती। अत: गुरुकुलों के संचालन तथा नये गुरुकुल प्रारम्भ करने की दिशा में विशेष प्रयत्न की आवश्यकता है। गुरुकुलों के नाम से आधुनिक शिक्षा को समाज तक पहुँचाने वाले गुरुकुलों में वैदिक सिद्धान्तों का भी समावेश होना अनिवार्य है, इस विषय पर सभी आचार्यों ने अपना चिन्तन व्यक्त किया। सभी प्रमुख आर्यनेतृत्व एवं आचार्यों ने एक स्वर से प्राच्य विद्या में वैज्ञानिक अनुसंधान पर भी बल दिया। इस प्रकार की गोष्ठी के लिए सभी महानुभावों ने डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई) का हार्दिक आभार व्यक्त किया।

इस कार्यक्रम में समस्त आचार्य-आचार्यों ने गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के उन्नति विषयक चिन्तन प्रस्तुत किये। इस अवसर पर वैदिक गुरुकुल परिषद् के कार्यान्वयन में सराहनीय योगदान के लिए गुरुकुल पौन्धा देहरादून के आचार्य तथा वैदिक गुरुकुल परिषद् के सहमन्त्री आचार्य डॉ. धनञ्जय जी को सम्मानित किया गया साथ ही वैदिक गुरुकुल परिषद् की सैद्धान्तिक प्रतिस्पर्धाओं एवं परीक्षाओं कें सोत्साह से भाग ग्रहण करने के लिए कन्या गुरुकुल पंचगाँव हरयाणा की आचार्या चन्द्रकला जी को सम्मानित किया गया।

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम के मूलधूरी एवं वैदिक सिद्धान्त परीक्षा के प्रेरक, वैदिक मिशन मुम्बई के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव शास्त्री ने समस्त आचार्य-आचार्यों को सम्मानित कर धन्यवाद ज्ञापन किया। **-ब्र. आकाश आर्य**

वाणी

❑ ब्र. आकाश आर्य...✍

छन्द - इन्द्रवज्रा

लक्षणम् - स्यादिन्द्रवज्राः यदि तौ जगौ गः।

स्वर्गापवर्गेषु कृताधिकारः,
देवाऽसुरान्या स्ववशञ्चकार।
आम्नायशास्त्राऽदिकशीलवाणी,
भाषाऽस्मदीया गीर्वाणवाणी ॥१ ॥

g"kkZ gò kU qekl qfUk%
/kk=hl e"kka x#f' k'; l fUk%A
T; k Rukr nh ki zHkr kuHkk sfLeu}
Kku'soj hl ad r̀ nsok kû „ û

O; kØh; ek kk Fk Z nkl nfDr %
fo| k r jk kaJ qr c k sHk fDr %A
t k; s i R; sd fer kl qk k]
' kkL=h; d kO; k fUor o sok kû ..û

T; k Ruk Ukd k js i Zkr s qk qk]
d kU k ek d fq Br d kS y k{ khA
c ¼ ker k; k l jq ns r kfH k%
i nek uLFk fpZ nsok kû †û

y ks k Ukd kjL; fouk kuk;]
Kkui z kjk; foukuk; A
fo| k/kjk; kefr ' kk sk uk;]
I d Yi r sp k# fg o sok kû ‡û

छन्द - मालिनी

लक्षणम्- ननमययुतेयं मालिनी भोगगिलोकैः।

कुसुमपदविभागे पुष्पिताऽग्रे परागः,
भवति सुरमणीय खेऽरुणो द्योतमानः।
मृदुनि मृगशरीरे गन्धदीप्तिस्तु नाभेः,
जयति सकलवाणीषु स्मिताऽमर्त्यवाणी ॥६ ॥

समरशरशरव्ये ज्यासमुद्घोषकारम्,
वियति भवति शब्दं वेपकं शत्रुमारम्।
अरिवधसमये जातैकदेशेऽवसाने,
सकलगुरुसुकृत्यान्याश्रयन्तीह वाणी ॥७ ॥

छन्द - मन्दाक्रान्ता

लक्षणम्-मन्दाक्रान्ताऽम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ ग युग्मम्।

विद्याकाशे सघनतिमिरो येन विध्वंसमानः,
ज्ञानाऽचारात्कृतविमलधीर्विश्वनृणां समाजः।
यस्याऽग्रे विश्वविबुधजना बुद्धिमन्तः परास्ताः,
आनन्दं तत्प्रणवसकलं यस्य सत्यार्थवाणी ॥८ ॥

लोकाऽकूपारबुधसलिलं शुष्कतां यात्यदो वै,
विद्यासारेव सलिलमृगा भग्नग्रीवाभवास्ते।
ज्ञानार्षज्योतिरुदयति याऽमोदिनी ह्यर्वणेषु,
शुभ्रोर्मिभिर्गमयति दिवं जाह्नवीरूपवाणी ॥९ ॥

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकिततनुर्घोरकृष्णाऽन्धकारे,
बाह्याऽलंकारसुरभितकान्ता नु देदीप्यमाना।
विश्रब्धम्मे मनस्सरसिजो गूढ़गर्ताऽम्बुराशौ,
प्रक्षिण्वन्ति मुकुटमणयो मण्डनं वक्त्रवाणी।।

- शास्त्री प्रथम वर्ष
गुरुकुल पौन्धा देहरादून

योगदर्शनशिक्षणम्

❑ शिवदेव आर्यः...✍

क्रमशः...

शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यो विकल्पः

-योगदर्शन-१/९

पदार्थव्याख्या-

शब्दज्ञानानुपाती=शब्द से उत्पन्न ज्ञान का अनुकरण करने वाली **वस्तुशून्यः**=वस्तु की यथार्थ सत्ता से रहित **विकल्पः**=विकल्पवृत्ति कहलाती है।

सूत्रार्थ-

शब्द से उत्पन्न ज्ञान के आधार पर उसके पीछे-पीछे चलने का जिसका स्वभाव हो तथा जो वस्तु अपने स्वरूप से रहित हो, ऐसी वृत्ति को 'विकल्पवृत्ति' कहते हैं।

व्यासभाष्य-

स न प्रमाणोपारोही, न विपर्ययोपारोही च। वस्तुशून्यत्वेऽपि शब्दज्ञानमाहात्म्यनिबन्धनो व्यवहारो दृश्यते। तद्यथा चैतन्यं पुरुषस्य स्वरूपमिति। यदा चितिरेव पुरुषस्तदा किमत्र केन व्यपदिश्यते, भवति च व्यपदेशे वृत्तिः। यथा चैत्रस्य गौरिति। तथा प्रतिषिद्धवस्तुधर्मा निष्क्रियः पुरुषः, तिष्ठति बाणः, स्थास्यति स्थित इति। गतिनिवृत्तौ धात्वर्थमात्रं गम्यते। तथानुत्पत्तिधर्मा पुरुष इति उत्पत्तिधर्मस्याभावमात्रमवगम्यते। तथानुत्पत्तिधर्मा पुरुष इति उत्पत्तिधर्मस्याभावमात्रमवगम्यते न पुरुषान्वयी धर्मः। तस्माद्विकल्पितः स धर्मस्तेन चास्ति व्यवहार इति।।

व्यासभाष्य पदार्थ व्याख्या-

स=वह विकल्प वृत्ति **न**=न **प्रमाणः**=प्रमाण के **उपरोही**=अन्तर्गत है **च**=और **न**=न ही **विपर्ययः**=विपर्य के **उपारोही**=अन्तर्गत है। क्योंकि **वस्तुशून्यत्वे**=वस्तु की यथार्थ सत्ता से रहित होने पर **अपि**=भी **शब्दज्ञानमाहात्म्यनिबन्धनः**=शब्द ज्ञान की महिमा से युक्त **व्यवहारः**=व्यवहार **दृश्यते**=देखा जाता है। **तद्यथा**=जैसे कि **चैतन्यम्**=चेतनता **पुरुषस्य**=पुरुष का **स्वरूपम्**=स्वरूप है **इति**=ऐसा। **यदा**=जब **चितिः**=चेतनता **एव**=ही **पुरुषः**=आत्मा है **तदा**=तब **किम् अत्र**=यहाँ किससे **केन**=किसको **व्यपदिश्यते**=बताया जा रहा है, **च**=और इस प्रकार चेतनता पुरुष का स्वरूप है **व्यपदेशे**=बताने से **वृत्तिः**=एक प्रकार की वृत्ति **भवति**=उत्पन्न होती है। **यथा**=जैसे **चैत्रस्य**=चैत्र नामक पुरुष की **गौः**=गाय **इति**=ऐसा कहने पर वृत्ति बनती है। **तथा**=वैसे ही **प्रतिषिद्धवस्तुधर्मा**=प्रकृति और उसके विकारों=पदार्थों में रहने वाले धर्मों यथा रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्दादि तथा सत्त्व, रज और तम धर्मों से रहित और **निष्क्रियः**=क्रिया रहित **पुरुषः**=आत्मा है। इसी प्रकार **बाणः**=बाण **तिष्ठति**=ठहरता है, **स्थास्यति**=ठहरेगा, **स्थितः**=ठहर गया है **इति**=ऐसा। **गतिनिवृत्तौ**=गति की निवृत्ति में **धात्वर्थमात्रम्**=स्था धातु का अर्थ मात्र ही प्रतीत होता है। **तथा**=वैसे ही **अनुत्पत्तिधर्मा**=उत्पत्ति धर्म के अभाव वाला **पुरुषः**=आत्मा है **इति**=ऐसा इसमें **उत्पत्तिधर्मस्य**=उत्पत्ति धर्म के **अभावमात्रम्**=अभाव की **अवगम्यते**=प्रतीति हो रही है **न**=न कि **पुरुषान्वयी**=पुरुष के अन्दर रहने वाला **धर्मः**=अनुत्पत्तिधर्म को जानना चाहिए। **तस्मात्**=इस कारण से **सः**=वह उत्पत्ति के अभाव वाला **धर्मः**=धर्म **विकल्पितः**=विकल्प वृत्ति है, **च**=और **तेन**=उससे **व्यवहारः**=व्यवहार **अस्ति**=होता है, **इति**=ऐसा जानें।

व्यासभाष्य व्याख्या-

वह विकल्पवृत्ति प्रमाणवृत्ति के अन्तर्गत नहीं है और न ही विपर्यय के अन्तर्गत मानी जा सकती, क्योंकि प्रमाणवृत्ति यथार्थज्ञान है और विपर्ययवृत्ति सीप में चाँदी का भ्रम दूर होने पर समाप्त हो जाती है परन्तु विकल्पवृत्ति में वस्तु के न होने पर भी शब्दजनितज्ञान के प्रभाव से युक्त व्यवहार देखा जाता है।

यथा -**'चितिरेव पुरुषः'** इस व्यासवाक्य के अनुसार जीवात्मा का स्वरूप चेतनता है, तब यहाँ किससे किसको भिन्न कहा जा रहा है? क्योंकि इस वाक्य से पुरुष

चेतनता का स्वामी है, इससे यहाँ स्व-स्वामी-भाव प्रकट हो रहा है और इस प्रकार से विशेषण विशेष्य का कथन करने पर एक प्रकार की वृत्ति बनती है। यह ऐसी ही बनती है जैसे की चैत्र नामक व्यक्ति की गौ कहने पर वृत्ति बनती है। अर्थात् ज्ञान होता है कि गौ विशेष्य है और चैत्र उसका विशेषण है। जैसे चैतन्य पुरुष का स्वरूप है इस उदाहरण में पुरुष में चैतन्य धर्म को युक्त करके कहा जाता है। उसी प्रकार वस्तुधर्म से हीन करके भी कहा जाता है। उदाहरणार्थ पुरुष निष्क्रिय है। जैसे पृथिवी परिवर्तन धर्मवाली है जीवात्मा वैसा परिवर्तन धर्म वाला नहीं है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण में बाण रुकता है, रुकेगा, रुक गया आदि, ये सब विकल्प वृत्तियाँ हैं।

ये सब वृत्तियाँ विकल्प वृत्ति इसलिए हैं कि गति-निवृत्ति होने पर धात्वर्थ मात्र जाना जाता है। यहाँ बाण में कोई क्रिया नहीं है पुनरपि 'ठहरना=स्थित है', इस शब्द से क्रिया जैसे व्यवहार होता है। वैसे ही अनुत्पत्ति धर्म वाला पुरुष है। इसके कहने से उत्पत्ति धर्म का अभाव मात्र जाना जाता है। पुरुष में रहने वाला कोई धर्म नहीं जाना जाता है अर्थात् यहाँ पर पुरुष में उत्पत्ति धर्म का निषेध जाना जाता है। पुरुष में रहने वाला कोई धर्म नहीं जाना जाता। यहाँ पुरुष में उत्पत्ति धर्म का अभाव कल्पि किया जाता है और उस कल्पित धर्म (विकल्प) से व्यवहार होता है।

महर्षिदयानन्देनोक्त -

तीसरी विकल्प-वृत्ति (शब्द-ज्ञान) जैसे किसी ने किसी से कहा कि एक देश में हमने आदमी के शिर पर सींग देखे थे। इस बात को सुनके कोई मनुष्य निश्चय कर ले कि ठीक है - सींग वाले मनुष्य भी होते होंगे। ऐसी वृत्ति को विकल्प कहते हैं। सो झूठी बात है अर्थात् जिसका शब्द तो हो परन्तु किसी प्रकार का अर्थ किसी को न मिल सके, इसी से इसका नाम विकल्प है।

-ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, उपासनाविषय

शेष अग्रिम अंक में......

लाला लाजपतराय से जुड़ा एक प्रेरक प्रसङ्ग

❑ **प्रीतिश गोयल...**

एक स्कूल के छात्रों ने एक बार पिकनिक का कार्यक्रम तैयार किया। सभी बच्चे इसके लिए अपने घर से कुछ न कुछ खास खाने की चीज़ बनाकर लाने वाले थे। स्कूल में एक गरीब छात्र भी था। उसने घर आकर माँ को सारी बात बताई, माँ ने कहा घर में कुछ खास चीज़ तो नहीं है पर कुछ खजूर रखें हैं। तू उन्हें ही ले जा। कुछ देर बाद माँ को लगा कि पिकनिक पर बाकी सभी बच्चे खाने-पीने की अच्छी-अच्छी चीज़ें लाएँगे, ऐसे में यदि मेरा बेटा खजूर ले जाएगा तो ठीक नहीं लगेगा। माँ ने कहा तुम्हारे पिता आएँगे तो मैं बाजार से अच्छी चीज़ मंगवा दूँगी। बच्चा निराश होकर एक तरफ बैठ गया। थोड़ी देर बाद पिता घर आए। बेटे को उदास बैठा देखकर पूछा-क्या हुआ? बेटा कुछ न बोला। पिता ने बेटे की माँ से सारी बात जान ली और आपस में विचार-विमर्श करने लगे। आँगन में बैठा बालक उन्हें देखता रहा, उसे दु:ख था कि उसके कारण माता-पिता परेशानी में हैं। कुछ देर बाद उसके पिता चप्पल पहन कर बाहर जाने लगे। बालक ने पूछा - पिता जी! आप कहाँ जा रहे हैं? बेटा तेरी उदासी देखी नहीं जाती। मैं अपने मित्र से कुछ पैसे उधार लेकर कुछ सामान ले आता हूँ, तू पिकनिक पर ले जाना। बालक ने उत्तर दिया - नहीं, पिता जी! उधार माँगना अच्छी बात नहीं। कर्ज लेकर शान दिखाना बुरी बात है। मैं पिकनिक पर ये खजूर ही लेकर जाऊँगा। पिता ने पुत्र को सीने से लगा लिया। यही बालक बड़ा होकर पंजाब केसरी लाला लाजपत राय के नाम से विख्यात हुआ।

- प्राथमिक अध्यापिका,
दिल्ली नगरपालिका विद्यालय, रोहिणी

प्राणायाम से मन की शुद्धि

जैसे अग्नि में तपाने से सुवर्णादि धातुओं का मल नष्ट होकर शुद्ध होते हैं, वैसे प्राणायाम करके मन आदि इन्द्रियों के दोष क्षीण होकर निर्मल हो जाते हैं।

संस्कृतशिक्षणम्

❑ शिवदेव आर्य...✍

क्रमशः...

क्रिया (धातु) विचार

क्रिया के बिना कोई वाक्य नहीं होता और प्रत्येक वाक्य में एक न एक क्रिया अवश्य होती है। जिससे वाक्य की सम्पूर्ति हो, उसे क्रिया कहा जाता है। जैसे – **बालकः भोजनं खादति** (बालक भोजन खाता है)। यहाँ पर **बालकः** 'कर्ता' है, **भोजनं** 'कर्म' है और **खादति** 'क्रिया' है और यही क्रिया इस सम्पूर्ण वाक्य को पूर्ण करा रही है।

क्रिया का ज्ञान हम सरलता से इस प्रकार कर सकते हैं कि – हिन्दी में वाक्यों में जिसके अन्त में 'ता है, ती हैं, ते हैं, गा, गे, गी, था, थे, थी, रहा, रहे आदि' क्रियात्मक शब्दों का प्रयोग किया जाये तो वे क्रिया कहलायेंगी।

संस्कृत भाषा में क्रिया को मूल शब्दांश में धातु कहते हैं। ये धातुयें लगभग २००० हैं, इनका अर्थसहित संग्रह पाणिनि मुनि द्वारा लिखित धातुपाठ नामक पुस्तक में है। धातुओं का प्रयोग मूलरूप में नहीं किया जाता अर्थात् जैसा धातुपाठ में लिखा है वैसा प्रयोग न करके लकार के अनुसार तिङन्त बनाकर ही प्रयोग करते हैं। उदाहरण स्वरूप – 'पठ्' ऐसा प्रयोग नहीं होगा अपितु तिङन्त रुप बनाकर पठति, पठतः, पठन्ति, पठसि, पठथः, पठथ, पठामि, पठावः, पठामः आदि रूपों का प्रयोग किया जायेगा।

धातुओं का शब्दों के समान कोई लिंग नहीं होता। सभी लिंगों में धातु के रूप समान होते हैं।

क्रिया किस समय हुई अथवा वक्ता ने किस भाव से क्रिया का प्रयोग किया, इन दोनों बातों को दर्शाने के लिए तिङ् प्रत्ययों का दश लकारों में प्रयोग होता है। वह लकार दश ये हैं – लट्, लिट्, लुट्, लृट, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ् (भेद – विधिलिंङ् और आशीर्लिंङ्), लुङ्, और लृङ्।

प्रारम्भिक छः लकारों के अन्त में **ट्** है और अन्तिम चार के अन्त में **ङ्** है। ल् के आगे क्रम से **अ, इ, उ, ऋ, ए, ओ** लगाने से लकारों के नाम बन जाते हैं, यह नियम लकारों को सरलता से स्मरण करने के लिए है।

दश लकारों में से छः लकार तो काल को बताने के लिए हैं और तीन भाव को बताने के लिए एवं एक लकार वेद में प्रयुक्त होता है।

काल के लिए छः लकार

वर्तमान काल में –

लट्

भूत काल में –

लङ् (अनद्यतन भूत)

लृङ् (सामान्य भूत)

लिट् (परोक्ष भूत)

भविष्यत् काल में –

लृट् (भविष्यत्)

लुट् (अनद्यतन भविष्यत्)

भाव के लिए चार लकार

आज्ञा आदि भाव में –

लोट्

विधि आदि भाव में –

विधिलिङ्

आशीर्वाद आदि भाव में –

आशीर्लिङ्

वेद में प्रयुक्त

लेट्

संस्कृत के प्रारम्भिक ज्ञान के लिए पाँच लकारों (लट्, लङ्, लृट्, लोट् और विधिलिङ्) का प्रयोग प्रसिद्ध है, जिनका ज्ञान अत्यन्त अनिवार्य है।

वाक्य के निर्माण में क्रिया का बहुत महत्त्व होता है। क्रिया के विना सम्पूर्ण वाक्य अधूरा रहता है। किसी भी वाक्य में धातु को रख देने से वाक्य की पूर्ति नहीं होती अपितु वाक्य की पूर्ति के लिए धातु के रूप में लकार के अनुसार चलाने पढ़ते हैं। **शेष अग्रिम अंक में...**

- गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

आर्ष-ज्योतिः

फार्म - ४ (नियम ८ देखिए)

१.	प्रकाशन स्थान	:	देहरादून (उत्तराखण्ड)
२.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३.	मुद्रक का नाम	:	जयरति प्रिंटिग प्रेस
	क्या भारत का नागरिक है ?	:	हाँ
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)		-
	पता	:	आर्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुल, दून वाटिका-२ पौंधा, देहरादून-२४८००७
४.	प्रकाशक का नाम		आचार्य धनञ्जय
	क्या भारत का नागरिक है ?	:	हाँ
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)		-
	पता	:	आर्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुल, दून वाटिका-२ पौंधा, देहरादून-२४८००७
५.	सम्पादक का नाम		आचार्य धनञ्जय
	क्या भारत का नागरिक है ?	:	हाँ
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)		-
	पता	:	आर्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुल, दून वाटिका-२ पौंधा, देहरादून-२४८००७
६.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हैं।	:	आचार्य धनञ्जय आर्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुल, दून वाटिका-२, पौंधा, देहरादून-२४८००७

मैं आचार्य धनञ्जय एतदद्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह./आचार्य धनञ्जय

दिनांक ५ अप्रैल, २०१९

प्रकाशक

आर्ष-ज्योतिः अब आपके वाट्सएप पर भी....

यदि आप वाट्सएप के माध्यम से 'आर्ष-ज्योतिः' को प्राप्त करना चाहते हैं तो आप वाट्सएप दूरभाष संख्या 8810005096 को आर्ष-ज्योतिः नाम से सेव कर सन्देश में 'आर्ष-ज्योतिः' लिखें।

वैदिक मिशन मुम्बई का गुरुकुल सम्मेलन सोल्लास सम्पन्न

ज्योतिष्कृणोति सूनरी

आर्ष-ज्योतिः

ISSN 2278-0912

अन्ताराष्ट्रिय मूल्याङ्कित मासिक द्विभाषीय (हिन्दी-संस्कृत) शोधपत्रिका

सम्मानित लेखकों एवं शोधार्थियों को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि 'आर्ष-ज्योतिः' अन्ताराष्ट्रिय मूल्याङ्कित मासिक द्विभाषीय (हिन्दी-संस्कृत) शोधपत्रिका का 'स्मृति-विशेषाङ्क' जून मास (2019) में प्रकाशित किया जा रहा है। इसके लिए अपना मौलिक शोधलेख पेजमेकर या वर्ड प्रोग्राम में AA text या Walkman-Chanakya-901 Font में 20 अप्रैल 2019 तक ईमेल arsh.jyoti@yahoo.in पर प्रेषित कर सकते हैं।

लेख प्रेषणार्थ विषय -

१. स्मृतियों का स्वरूप।
२. स्मृतियों की वर्तमान में उपादेयता।
३. स्मृतिग्रन्थों में स्त्रीधर्म।
४. स्मृतिग्रन्थों में भक्ष्याभक्ष्यविचार।
५. स्मृतिग्रन्थों में शिष्टाचार।
६. स्मृतिग्रन्थों में राजधर्म एवं न्याय-व्यवस्था।
७. स्मृतिग्रन्थों में आश्रमधर्म।
८. स्मृतिग्रन्थों में संस्कार-विमर्श।
९. स्मृतिग्रन्थों में कर्मफलमीमांसा।
१०. जातिव्यवस्था बनाम वर्णव्यस्था स्मृतिग्रन्थों के आलोक में।

नोट - लेखपर्यवेक्षकमण्डल द्वारा स्वीकृत लेख ही प्रकाशित किये जायेंगे।

-:: प्रसारणकार्यालय ::-

श्रीमद् दयानन्दार्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुल पौन्धा, देहरादून (उत्तराखण्ड)

चलवाणी - 09411106104, 08810005096

ई-मेल : arsh.jyoti@yahoo.in Website: www.pranwanand.org

पंजीयन संख्या : UTTBIL/2008/23546 डाक पंजीयन नं. : UA/DO/DDN/397/2019-2021

मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक एवं स्वामी : आचार्य धनञ्जय द्वारा श्रीमद्दयानन्द आर्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुल, दून वाटिका-२ पौंधा, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित एवं जयरति प्रिन्टिंग प्रेस, ३५ कांवली रोड, देहरादून से मुद्रित।
मुद्रण तिथि - ३ अप्रैल २०१९ :: डाक प्रेषण तिथि - ८ अप्रैल २०१९